एकता और राष्ट्रीय विकास के लिए निष्ठापूर्ण निमंत्रण

समापन भाषण

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबेअ रह.

जलसा सालाना क़ादियान 1991 ई. के अवसर पर
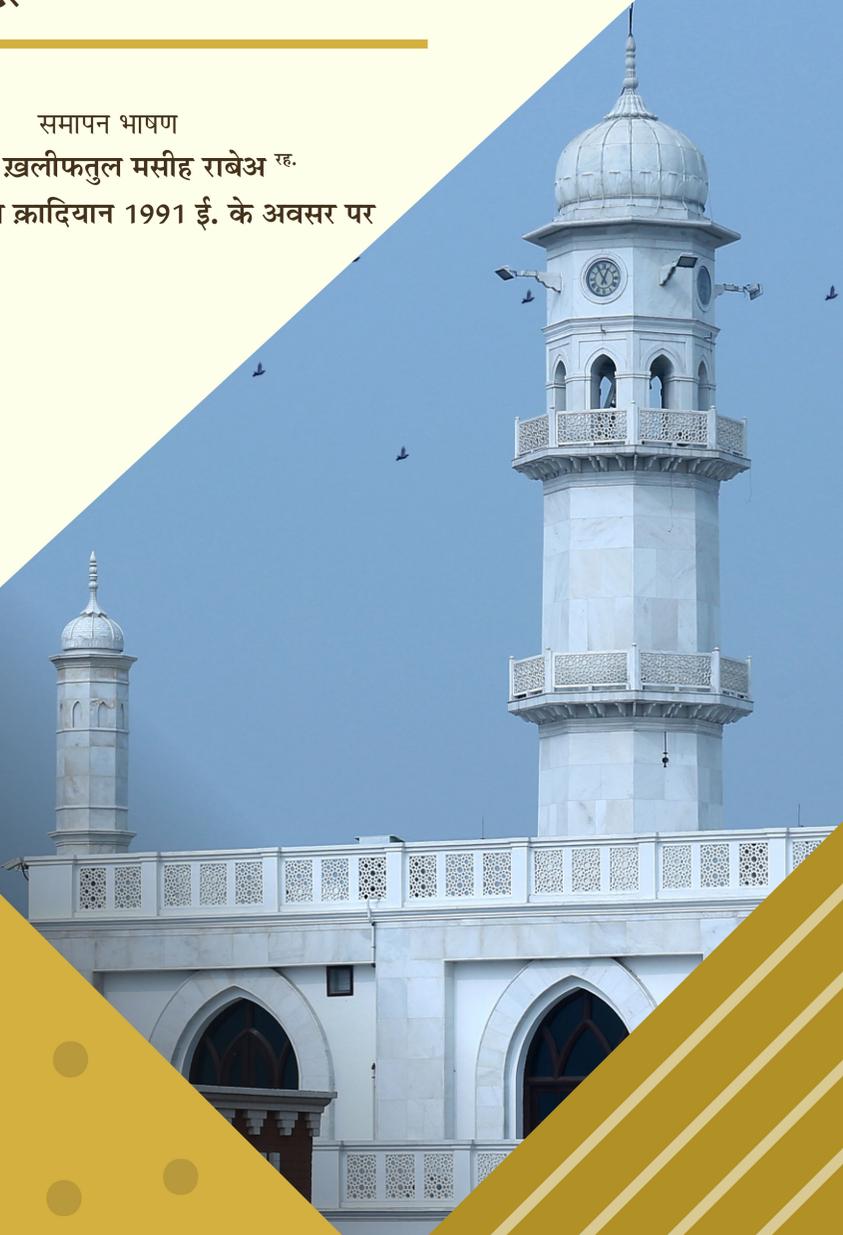
एकता और राष्ट्रीय विकास
के लिए
निष्ठापूर्ण निमंत्रण

समापन भाषण

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफतुल मसीह राबेअ रह.

जलसा सालाना क़ादियान 1991 ई. के अवसर पर

भाषण	: एकता और राष्ट्रीय विकास के लिए निष्ठापूर्ण निमंत्रण
Name of book	: Ekta Aur Rashtriy Vikas Ke Lie Nishthapoorn Nimantran
अनुवादक	: डॉ अन्सार अहमद, पी एच डी, आनर्स इन अरबिक
Translated By	: Dr. Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाईप, सैटिंग	: नईम उल हक़ कुरैशी
Type, Setting	: Naeem Ul Haque Qureshi
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) मार्च 2018 ई०
Edition	: 1st Edition (Hindi) March 2018
संख्या,	: 1000
Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, Distt. Gurdaspur, (Punjab) 143516
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian Distt. Gurdaspur (Punjab) 143516

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह राबे (चतुर्थ) रहमहुल्लाह तआला का

ज्ञान वर्धक ऐतिहासिक समापन भाषण

28 दिसम्बर 1991 ई० के सौ वर्षीय
जलसा सालाना के अवसर पर

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरह फ़ातिहा की तिलावत के बाद फ़रमाया :-

अल्लाह तआला का असीम उपकार है कि बहुत भलाई और बहुत ही ख़ूबी के साथ बहुत ही पवित्र माहौल में तथा बहुत ही ईमान में वृद्धि करने वाले दृश्यों के साथ यह जलसा सालाना जो एक विशेष ऐतिहासिक जलसा सालाना है अपने समापन की घड़ियों को पहुँच रहा है। यह जलसा कई दृष्टिकोण से एक ऐतिहसिक हैसियत रखता है। सौ वर्ष के बाद पहला जलसा हर बाद में आने वाले सौ साला जल्से की तुलना में एक अलग विशेषता रखता है। यह वह जलसा भी है जिस में चवालीस वर्ष से अन्तराल के बाद पैंतालीसवें वर्ष में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा को स्वयं सम्मिलित होने की तौफ़ीक़ मिली है। यह वह जलसा है जिसमें हिन्दुस्तान की जमाअतें इतनी प्रचुरता से शामिल हुई हैं कि जलसा सालाना के सौ साला इतिहास में आज तक कभी उन सूबों और बहुत दूर के इलाकों से जमाअतें इतनी कसरत से शामिल नहीं हुईं।

कश्मीर से भी आश्चर्यजनक तौर पर आशा से बहुत बढ़कर मेहमान आए। अत: अन्तिम अनुमान जो मैंने कश्मीर से आने वाले प्रबन्ध करने

वालों से पूछा तो उन्होंने बताया कि तीन हज़ार के लगभग कश्मीरी अहमदी मुख़्लिस लोग यहाँ पहुँच चुके हैं। उड़ीसा एक बहुत दूर का सूबा है जहाँ से यहाँ आने तक तीन दिन और तीन रात की कठिन दूरी तय करनी पड़ती है बहुत ग़रीब जमाअतें हैं। ग़रीब परन्तु बहुत नियमित रूप से सामर्थ्य के अनुसार चन्दा देने वाली जमाअतें हैं, वहां मौसम प्राय: गर्म रहता है या कम गर्म रहता है, सर्दी नहीं पड़ती। इस के बावजूद इतनी सर्दी के मौसम में कष्ट सहन कर के इतनी प्रचुरता से उड़ीसा के दोस्त और औरतें यहाँ पहुंची हैं कि जब मैंने उनसे अपनी मज्लिसों में प्रश्न किया कि आप में से कितने हैं जिन को पहले कभी क़ादियान नहीं आए। तो यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बहुत से लोग ऐसे थे जिनको इस से पहले कभी क़ादियान आने अवसर नहीं मिला तो यह जलसा इस दृष्टि से भी बहुत सी बरकतें लेकर आया है। परन्तु इस समय मैं इन बातों के वर्णन करने के लिए खड़ा नहीं हुआ, बीच में उनकी चर्चा कर रहा हूँ किन्तु इससे पूर्व कि मैं असल विषय की तरफ़ लौटूं यह बताना आवश्यक समझता हूँ कि इस जलसा सालाना की सफलता में क़ादियान के ग़ैर मुस्लिम निवासियों और उनके प्रेम तथा इनकी निष्कपटता का असाधारण हाथ है। मेरे वहम-व-गुमान में भी नहीं था कि क़ादियान के वे निवासी जो हिन्दुस्तान के विभाजन के बाद यहाँ आबाद हुए वे इतने विशाल हौसले तथा खुले दिल से खुली बाहों से हमारा स्वागत करेंगे। और इतने प्रेम की अभिव्यक्ति करेंगे। मुझे अफ़्सर जलसा सालाना की तरफ़ से यह सूचना पहुंची कि जब हमें मकानों की कठिनाई महसूस हुई चूंकि यहाँ दरवेशों की संख्या तो बहुत थोड़ी है। आने वालों की संख्या प्रत्येक आशा से अधिक बढ़ गई इसलिए कल के दिन की उपस्थिति 20 हज़ार से अधिक थी, जबकि उनकी उम्मीद यह थी कि यहाँ कुल मिलाकर 13

हज़ार के लगभग मेहमान यहाँ आ सकेंगे और जब 22 हज़ार से अधिक गिनती जलसागाह पर की जाए तो इस का मतलब है कि इससे अधिक दोस्त औरतें और मर्द सब मौजूद हैं चूंकि बहुत से अपने कामों में व्यस्त रहते हैं और जलसा में शामिल नहीं हो सकते। बहरहाल उन्होंने बताया कि क़ादियान के कुछ निवासी सिक्ख लोग यह मालूम करके स्वयं पहुंचे और बड़े आग्रहपूर्वक हमारे मेहमानों का सम्मान करते हुए और प्रेम के साथ अपने घरों में लेकर गए और जैसा कि पुराने ज़माने में क़ादियान के विभिन्न मुहल्लों में अक्सर मेहमान जगह पा जाते थे। इस बार भी धार्मिक मतभेद के बावजूद पाकिस्तान से राजनीतिक मतभेद भी हैं। फिर भी बाहर से आने वाले मेहमानों के साथ चाहे वे किसी देश से आए हों उन्होंने बहुत ही मुहब्बत और रहमत का व्यवहार किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल दे।

इन्सानियत धर्म का पहला क़दम है। यदि इन्सानियत प्राप्त हो जाए तो फिर ख़ुदा की तरफ़ चलने के लिए रास्ते आसान हो जाया करते हैं और जो ख़ुदा के रास्तों पर चलते हैं उन्हें अनिवार्य तौर पर इन्सानियत प्राप्त होती है, जितना ख़ुदा के क़रीब जाते हैं उतना ही उनके अन्दर इन्सानी क़द्रें बढ़ती रहती हैं। इन दोनों बातों का एक दूसरे से अनिवार्य संबंध है। तो इस पहलू से मुझे बहुत ख़ुशी है कि धार्मिक मतभेद अपने स्थान पर परन्तु यहाँ हमारे माहौल में इन्सानी Values की रक्षा की जा रही है और इस शमा को रौशन रखे हुए लोग हैं। अल्लाह तआला उनके दिलों को भी रौशनी प्रदान करे उनके मस्तिष्कों को भी रौशनी प्रदान करे और एक एवं अद्वितीय ख़ुदा के प्रेम में डूबकर हर उस मार्ग को अपनाएं जो ख़ुदा तआला तक पहुंचाता है।

अब मैं आपका ध्यान इस बात की तरफ़ ले जाना चाहता हूँ कि दुनिया में बड़ी तेज़ी के साथ इन्क़िलाब प्रकट हो रहे हैं और दुनिया के नक़्शे बदल रहे हैं। इस विषय पर किसी सीमा तक मैं अपने जलसा सालाना के भाषण में प्रकाश डाल चुका हूँ तथा अधिक विस्तार से इस विषय में जाना नहीं चाहता परन्तु यह बताना आवश्यक है कि इन परिवर्तनों का जमाअत अहमदिया से गहरा संबंध है। रूस की क्रांति ने दुनिया में एक बहुत ही अहम् भूमिका अदा की। दुनिया को विभिन्न पहलुओं से विभाजित किया। जबकि इस से पहले विभाजन की किस्म और था। रूसी क्रान्ति जो बीसवीं शताब्दी के आरम्भमें हुई। 1918-1919 ई में इस क्रान्ति ने तेज़ी के साथ हरकत की और अपनी पूर्णता को पहुंची। इस क्रान्ति की विशेषता यह थी कि दुनिया नए संगठनों में विभाजित हुई है। इस से पहले गोरों और कालों का विभाजन था, उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम का था, किन्तु अमीर और ग़रीब के विभाजन के दृष्टिकोण से पहली बार दुनिया को दो भागों में बांटा गया। यह क्रान्ति ज़ारे रूस के विभाजन के टूटने से हुई। अब जो एक नई क्रान्ति आई है उसमें रूस ने गत 70 वर्ष में अपने नवीन दृष्टिकोण के साथ जो कुछ प्राप्त किया था उसे सहसा खो दिया और यह स्वीकार किया कि हमारा परिणाम कुछ भी नहीं था केवल हानि और बदनामी थी और उसके परिणामस्वरूप अचानक दुनिया में एक भूकम्प की सी अवस्था पैदा हुई और विभिन्न बुद्धिमानों ने विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियां कीं। उन अभिव्यक्तियों में कहाँ तक सच्चाई है किस सीमा तक उनकी सोचें सही दिशा पर हैं। इस बहस को अभी एक ओर करते हुए यह बताना चाहता हूँ कि इन दोनों क्रान्तियों के संबंध में हमारे ख़ुदा ने जमाअत अहमदिया को पहले सूचना दे रखी थी और बड़ी स्पष्ट और अटल सूचना थी। इसलिए दुनिया के

अनुमान चाहे कुछ भी हों कि इन क्रान्तियों के परिणाम स्वरूप क्या प्रकट होगा। जहाँ तक जमाअत अहमदिया का संबंध है उसे पहले भी विश्वास है और परिस्थितियों के प्रकट होने के बाद यह विश्वास और भी बढ़ चुका है कि जो भी प्रकट होगा वह जमाअत अहमदिया के पक्ष में अच्छा होगा और जमाअत अहमदिया का विश्वव्यापी उन्नति के लिए एक माध्यम साबित होगा।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा से सूचना पाकर रूस के ज़ार की तबाही और दर्दनाक हालत के नक़्शे अपनी एक नज़्म में प्रस्तुत किए तथा वह नज़्म एक ऐसे विश्वव्यापी भूकम्प के बारे में थी जिसके संबंध में ख़ुदा ने आप को भूकम्प के रंग में सूचना दी, परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़ी स्पष्टता के साथ यह लिखा कि विश्वव्यापी भूकम्प आवश्यक नहीं कि प्रत्यक्ष भूकम्प के रूप में हो। महान विश्वव्यापी विपत्तियाँ जो पूरी दुनिया को हिला डालती हैं वे भी भूकम्प का आदेश रखती हैं। इसलिए मैं नहीं जानता कि वह क्या विपत्ति होगी या कैसी विपत्तियाँ होंगी, परन्तु ऐसा भयावह और नसीहत देने वाला निशान प्रकट होने वाला है कि सब दुनिया उसकी गवाह ठहरेगी फ़रमाया :-

यक बयक इक ज़लज़लः से सख़्त जुंबिश खाएंगे
क्या बशर और क्या शजर और क्या हजर और क्या बहार

अब यह देख लें कि भूकम्पों से तो इस प्रकार की हालत नहीं हुआ करती जो इतने विशाल पैमाने पर पेड़ और पक्षी, मकान, इन्सान और समुद्र भी गतिशील हो जाएँ।

इक झपक में यह ज़मीं हो जाएगी ज़ेरो ज़बर
नालियाँ खूं की चलेंगी जैसे आबे रूदबार

रात जो रखते थे पोशाकें बरंगे यासमन
(अर्थात् चमेली की तरह सफ़ेद पोशाकें रखते थे)
सुब्ह कर देगी उन्हें मिस्ले दरख़्ताने चिनार
भूलेंगे नग़मों को अपने सब कबूतर और हज़ार
होश उड़ जाएंगे इन्सां के परिन्दों के हवास
मुज़्महिल हो जाएंगे इस ख़ौफ़ से सब जिन्नो इन्स
ज़ार भी होगा तो होगा उस घड़ी बाहाले ज़ार
इक नमूना क़हर का होगा वह रब्बानी निशान
आस्मां हमले करेगा खींचकर अपनी कटार[1]।✶

अब यह जो मिस्रा है -

"ज़ार भी होगा तो होगा उस घड़ी बाहाले ज़ार"

बहुत ही विचार करने योग्य है, क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब ये शे'र कहे तो उस समय ज़ार की हुकूमत बर्तानवी हुकूमत के बाद या उसके बराबर दुनिया की सब से बड़ी प्रतापी और सम्माननीय हुकूमत थी और ज़ार की ज़ारियत के भय से यूरोप के छोटे राजाओं के पित्ते पानी होते थे। ज़ार के भय से दुनिया की क़ौमों पर थरथराहट छा जाती थी क्या बात थी कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस युग में यह फ़रमा रहे हैं - ज़ार भी होगा अर्थात् जिस दिन कि मैं खबर दे रहा हूँ उस दिन संभव होगा ज़ार के बारे में समस्त संसार के अख़बारों ने जो मुख्य हैडिंग लगाए उर्दू में तो यही थे कि "ज़ार की हालते ज़ार" और अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं के अख़बारों में भी इसी विषय को मुख्य हैडिंग के रूप में प्रस्तुत किया। निस्सन्देह यह ख़ुदा का कलाम था जो इस निशान के साथ पूरा हुआ। परन्तु केवल

✶ रूहानी ख़ज़ायन बराहीन अहमदिया भाग-5, जिल्द-21, पृष्ठ-152,152

यही एक कलाम नहीं जो नकारात्मक हैसियत रखता है, अर्थात् किसी बुरे बादशाह की तबाही और बर्बादी। बल्कि इसके बाद जो इल्हाम हैं वे रूस की क्रांतियों के बाद वहां अहमदियत की उन्नति और विकास की सूचना देते हैं।

फ़रमाया :-

> "उसी रात स्वप्न में देखा कि मनो ज़ारे रूस का सोटा मेरे हाथ में है और उसमें गुप्त तौर पर बन्दूक की नाली भी है। दोनों काम निकालता है और फिर देखा कि वह बादशाह जिसके पास बू अली सीना था (यह भी रूसी इलाक़े में थे बू अली सीना) उसकी कमान मेरे पास है और मैंने उस कमान से एक शेर की तरफ़ तीर चलाया है और शायद बू अली सीना भी मेरे पास खड़ा है और वह बादशाह भी।"✶

बू अली सीना की आज भी जितनी रूस के पूर्वी मुसलमानों में प्रतिष्ठा है उतनी प्रतिष्ठा दुनिया में शायद ही किसी बुद्धिमान की हुई हो। जो रूसी इंग्लेण्ड के जल्से में सम्मिलित होने के लिए आए थे, उन्होंने मुझे बताया और पहली बार उन्हीं से मुझे मालूम हुआ कि बुख़ारा और ताशक़न्द इत्यादि क्षेत्रों में बू अली सीना की पुस्तक "अलक़ानून" इतनी लोकप्रिय है कि कभी किसी बाज़ार से नहीं मिलती। जब-जब छपती है तुरन्त हाथों हाथ निकल जाती है और यही वे क्षेत्र हैं जिन का विशेष तौर पर इस नए दौर में अहमदियत की तरफ़ ध्यान हो रहा है। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं कि :-

---

✶ कापी इल्हामात "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पृष्ठ-4, तज़्किर: पृष्ठ-458,459 संस्करण-1969 रब्वाह से प्रकाशित।

> "मैं अपनी जमाअत को रशिया के क्षेत्र में रेत
> के (कणों) की तरह देखता हूँ।"✷

अर्थात् प्रचुरता के साथ फैली हुई देखता हूँ। यह तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियाँ थीं जिन का रूस के ज़ार की क्रान्ति के साथ संबंध और फिर देर के बाद प्रकट होने वाली घटनाओं से संबंध है।

अब मैं हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] का स्वप्न आपके सामने रखता हूँ जो अलफ़ज़ल 30 मई 1947 ई जिल्द-138/35 में प्रकाशित हुआ पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी में रूस की उस क्रान्ति का वर्णन है जिसमें ज़ारियत तबाह और बरबाद हो जाएगी। तत्पश्चात् एक दूसरी सत्ता रूस पर क़ब्ज़ा कर लेगी। अतः हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] को अल्लाह तआला ने यह खबर दी कि अब यह दूसरी सत्ता भी बरबाद होने वाली है और इसके बाद संसार में नवीन परिस्थितियाँ प्रकट होंगी। अतः हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] ने लिखा :-

> "परसों या अतरसों रात के समय जब मेरी आँख खुली तो बड़े ज़ोर के साथ मेरे दिल पर यह विषय उतर रहा था (यह स्वप्न नहीं है बल्कि एक कश्फ़ी दृश्य है या एक इल्हाम की सी हालत है।) कि इंग्लेण्ड और रूस के मध्य एक मोडीफ़ाइड (MODIFIED) ट्रीटी हो गई है जिसके कारण मध्य एशिया के इस्लामी देशों में बड़ी बैचेनी और चिन्ता फैल गई।"

✷ रजिस्टर रिवायत-ए-सहाबा जिल्द-12, पृष्ठ-114, तज़्किरः पृष्ठ-813 संस्करण-1969ई रब्वाह से प्रकाशित।

फ़रमाया :-

"मोडीफ़ाइड के मायने होते हैं समोया हुआ। वुस्ता, मैं समझता हूँ कि ये शब्द इस बात की ओर संकेत करते हैं कि संभवतः बाहरी दबाव और कुछ खतरों के कारण बर्तानिया गुप्त तौर पर रूस के साथ ऐसा समझौता कर लेगा जिस के कारण मध्य एशिया पर रूसी दबाव बढ़ जायेगा। इस समय मेरे मस्तिष्क में इराक़, फिलस्तीन और शाम के देश आए हैं। अर्थात् इन देशों के अन्दर रूस और अंग्रेज़ों के समझौते कर लेने के कारण घबराहट और चिन्ता पैदा होगी कि अंग्रेज़ जो कठोरता के साथ रूस का विरोध कर रहे थे उन्होंने यह समझौता उस से किस आधार पर किया है। जहाँ तक स्थायी एवं अन्तिम पड़ाव का प्रश्न है पवित्र क़ुर्आन तथा हदीस से मालूम होता है कि इन देशों में युद्ध तो अवश्य होगा परन्तु कभी राजनीतिक कारणों के अन्तर्गत शत्रुओं के दबाव को कम करने के लिए या उसके आक्रमण से बचने के लिए सरकारें अस्थायी तौर पर सुलह कर लेती हैं ताकि कोई ख़तरा न रहे। मालूम होता है कि अंग्रेज़ रूस के विचार से अपनी सुरक्षा का पहलू सुदृढ़ करने के लिए विवश होकर कोई समझौता रूस के साथ कर लेंगे। कभी राजनीतिक दबाव बड़े-बड़े परिणाम पैदा कर दिया करते हैं और सरकारें इन दबावों के

> कारण ऐसा क़दम उठाने के लिए विवश हो जाती हैं, ऐसा मालूम होता है कि बर्तानिया और अमरीका जो हमेशा रूस के हितों के मार्ग में रुकावट रहते थे। अब कुछ राजनीतिक परिस्थितियों या कारणों के अन्तर्गत उसके विरोध को त्याग देंगे तथा उधर रूस भी जो कुछ बातों में बर्तानिया और अमरीका से मतभेद रखता था, अब उनके विरोध को त्याग देगा।"

इतनी स्पष्टता और इतनी सफ़ाई के साथ हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] का यह कश्फ़ी दृश्य पूरा हो चुका है कि उसे पढ़कर आश्चर्य होता है और विशेष तौर पर वे तीन देश जिन पर रूसी सत्ता का ध्वस्त हो जाने का सर्वाधिक नकारत्मक प्रभाव पड़ा है। वह इराक़, शाम और फिलस्तीन हैं और मुस्लिह मौऊद[रज़ि॰] को अल्लाह तआला ने स्वप्न में ये तीन देश दिखाए और उनके बारे में मुसलमानों को सामान्यतया चिंतित दिखाया।

ये परिस्थितियां जो इस प्रकार प्रकट हो रही हैं ख़ुदा की तक़्दीर के अधीन संसार में कुछ परिवर्तन आते हुए प्रतीत होते हैं। पश्चिमी क़ौमें यह समझती हैं कि उनकी मर्ज़ी और उनकी इच्छाओं के अनुसार दुनिया के नवीन नक़्शे बनेंगे तथा पूर्वी क़ौमों में से बहुत सी अपनी सादगी, अज्ञानता या स्वार्थ के परिणामस्वरूप उन नक्शों को बनाने में उनकी सहायक हो रही हैं जो उन्होंने वास्तव में सम्पूर्ण संसार की कमज़ोर क़ौमों को हमेशा के लिए ग़ुलाम रखने के लिए बना रखे हैं। और ग़रीब देश धड़ों में जीवन व्यतीत करने के अभ्यस्त हो चुके हैं। वे यह सोच भी नहीं सकते कि इस प्रकार के आन्तरिक विभाजन के परिणामस्वरूप अमीर देश उनके साथ किस प्रकार अन्याय करते हैं और अपनी दूर पहुँचने वाली सरकार को

उनकी दूर जकड़ी जाने वाली ज़ंजीरों में परिवर्तन कर देते हैं, परन्तु आज का विषय राजनीतिक नहीं। जो बातें मैं कह रहा हूँ देखने में राजनीतिक हैं इसके बावजूद जैसा कि मैं स्पष्ट करूँगा कि विषय राजनीतिक नहीं बल्कि शुद्ध धार्मिक और मानवीय सहानुभूति से संबंध रखने वाला विषय है जिस वर्तमान स्थिति का नक्शा मैंने आपके सामने रखा है उसके परिणामस्वरूप ग़रीब देशों की ग़रीब जनता बहुत अधिक कष्ट और दुखों में ग्रस्त है और उनके हाल को पूछने वाला कोई नहीं है। उच्च वर्ग के लोग अपनी राजनीतिक दिलचस्पियों में मग्न अपनी धड़ेबाज़ियों से लाभ प्राप्त करने वाले एक-दूसरे देशों के साथ मतभेदों के नतीजे में उत्तम चालें सोचने और विजयी चालें चलाने की चिन्ता में पड़े रहते हैं और किसी को चिन्ता नहीं, किसी को यह होश नहीं कि हमारे देश की निर्धन जनता किस हाल में है। उनका दो समय की रोटी से पेट भरता भी है या नहीं या किसी को एक समय की सम्मान की रोटी भी उपलब्ध है या नहीं। एक ओर ग़रीब जनता है जो दिन-प्रतिदिन पीली पड़ती जा रही है। उनके चेहरों को देख कर मालूम होता है कि दिन-प्रतिदिन उनके अन्दर ख़ून कम होता जा रहा है।

और दूसरी ओर ऐसी व्यवस्थाएं जारी हैं कि ग़रीबों का ख़ून उन लोगों की ओर जा रहा है जो पहले से ही अधिक ख़ून रखते हैं। तो ग़रीब क़ौमें यदि अपने हितों की सुरक्षा नहीं करेंगी और शक्तिशाली एवं अमीर क़ौमों की तरफ़ अपनी ग़रीब जनता के ख़ून को उनकी तरफ़ जाने के सिलसिले को जारी रहने देंगी तो एक ऐसा समय आएगा जिससे फिर लौटना संभव नहीं रहेगा और यह दुनिया उस से बहुत अधिक विनाश में झोंक दी जाएगी जिन तबाहियों से हम ने ज़ाहरी रूप से रूस के ध्वस्त होने के द्वारा मुक्ति पाई है। यह एक ज़ाहिरी मुक्ति है जिस में

कोई वास्तविकता नहीं है। हक़ीक़त यह है कि अन्तिम अवस्था ये समस्त विपत्तियाँ ख़ुदा से दूरी का परिणाम हैं और इस पहलू से मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि यह एक शुद्ध रूप से धार्मिक दृष्टिकोण से दुनिया की परिस्थितियों पर विचार की अभिव्यक्ति है।

मैं जब से हिन्दुस्तान में आया हूँ चल-फिर कर जो परिस्थितियां देखी हैं मुझे तो ग़रीबी के कष्ट का कोई धर्म दिखाई नहीं दिया। सिक्ख आपदाग्रस्त हो या हिन्दू आपदाग्रस्त हो या मुसलमान आपदाग्रस्त हो, हर दु:ख का एक ही धर्म है और इसी प्रकार पाकिस्तान में चलते-फिरते जब मैंने देखा जिन दिनों मैं वहां फिरता था अहमदी का दु:ख हो या ग़ैर अहमदी का दु:ख हो, ईसाई का दु:ख हो या हिन्दू का दु:ख हो एक ही प्रकार का दु:ख था और मुझे एक ही प्रकार का महसूस हुआ। इसी प्रकार शेष देशों का हाल है। ग़रीब का तथा कमज़ोर का दु:ख जब तक हम महसूस करने की योग्यता पैदा नहीं करते उस समय तक हम ख़ुदा के निकट नहीं हो सकते। और वे जो ख़ुदा के निकट हैं उन का यह कर्त्तव्य है कि अपने जीवन का यह मिशन बना लें कि समस्त मानवजाति को एक-दूसरे के निकट करने की कोशिश करें। मानवता की छोटी बातें तो उन को बताएं, उच्चतम उन्नतियों की बारी तो बाद में आएगी।

इस संबंध में धर्मों को भी बहुत कुछ करना है और विभिन्न धर्मों के पथ-प्रदर्शकों को इस सिलसिले में बहुत भारी ज़िम्मेदारी निभानी है। परन्तु यह कैसे होगा और क्या तरीका है जिस से हम तीसरी दुनिया के देशों के लोगों को इकठ्ठा कर सकें और तीसरी दुनिया के राजनीतिज्ञों को यह बात दिखा सकें कि तुम्हारे उच्च एवं बुलन्द तथा अन्तिम हित इस बात से सम्बद्ध हैं कि तुम्हारी जनता भाइयों की तरह प्रेम पूर्वक एक-दूसरे के लिए क़ुर्बानी करते हुए जीवन व्यतीत करें और पूर्वी दुनिया

में समस्त पड़ोसी देशों के उत्तम संबंध हों। यदि ऐसा नहीं होगा तो नए नक़्शे जो दुनिया के उभर रहे हैं उनमें आपका स्थान पहले से अधिक कम और बहुत नीचा होगा।

रूस की क्रान्ति को दुनिया चाहे किसी ओर से देखे एक वास्तविकता तो अनिवार्य तौर पर उस से प्रकट हुई है कि रूस की व्यवस्था चाहे खोखली हो चाहे तर्कशास्त्र के दृष्टिकोण से उसका ग़लत होना सिद्ध किया जाए दुनिया को उसका एक लाभ अवश्य था कि ग़रीब क़ौमों के लिए एक सहारे का रूप था। वे शक्तिशाली क़ौमें जिनके हित कमज़ोर और ग़रीब क़ौमों से टकराया करते थे उन को प्राय: केवल इसलिए साहस नहीं होता था कि उन ग़रीब क़ौमों के अधिकारों को नष्ट करें कि रूस का भय और उसके डर की छाया उनके सर पर रहती थी। पिछले सत्तर वर्ष के इतिहास में ऐसा अनेकों बार हुआ है कि बहुत से ग़रीब देश केवल इस कारण बच गए कि रूस का हौआ उन की सहायता कर रहा था। उसी रूसी समर्थन की कल्पना ले कर इराक़ ने ग़लती की जो आपके सामने है और देखें कि इस नवीन क्रान्ति ने इराक़ की धज्जियाँ उड़ा दीं। यह बहस नहीं है कि वह सच पर था या ग़लती पर था। आंशिक तौर पर सच पर था या पूर्ण रूप से सच पर था, बहस यह है कि इस प्रकार दुनिया का इतिहास बन रहा था, इस प्रकार यह कार्य हो रहा था, इसमें अब परिवर्तन पैदा हो चुके हैं। यूरोप में जो ग़रीबों की सहानुभूति के आन्दोलन चले उनमें भी रूस के एक दौर का प्रभाव था। उन लोगों में जो रूढ़िवादी वार्ताओं से संबंध रखने वाले लोग थे वे इस भय से अपनी जनता के अधिकार पहले से बढ़कर दिया करते थे कि उनके अन्दर रूसी साम्यवाद समावेश न कर जाए। तो ये प्रभाव जो रूसी क्रान्ति के हैं बड़े दूरगामी और गहरे थे। इनका अलग होना आपको अचानक महसूस नहीं

होगा। ऐसे परिवर्तन पैदा होंगे जिनके बाद कमज़ोर लोग स्वयं को पहले से अधिक निहत्था समझेंगे। ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए। एक धार्मिक मार्ग-दर्शक होने के तौर पर मैं आपको क्या नसीहत कर सकता हूँ। यह वह विषय है जिसके बारे में मैं कुछ अतिरिक्त प्रकाश डालूँगा।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो सिलसिला अहमदिया के संस्थापक थे। आपको ख़ुदा तआला ने उन क्रान्तियों के बारे में विस्तार-पूर्वक सूचनाएँ दीं। एक लम्बा विषय है उसे मैं यहाँ नहीं दोहराता, परन्तु आप ही ने हिन्दुस्तान को उन कठिनाइयों का हल भी बता दिया था। अपने स्वर्गवास के पूर्व जो अन्तिम सम्बोधन हिन्दुस्तान वासियों से आप ने किया और यह पुस्तक बड़े दर्द के साथ हिन्दुस्तान के रहने वालों को नसीहत करते हुए आप ने लिखी उसका नाम है "पैग़ाम-ए-सुलह" (शान्ति का सन्देश)। मैं उसके कुछ उद्धरण आप के समक्ष रखता हूँ फिर इस विषय को और अधिक आगे बढ़ाऊंगा। तो आप को इस के आगे आने वाले विषय से संबंध समझ आ जाएगा।

आप फ़रमाते है :-

> "हे मेरे देशवासी भाइयो! यह संक्षिप्त पुस्तक जिसका नाम है "पैग़ाम-ए-सुलह" (यह उन अन्तिम दिनों में आपने लिखा है जिसमें मृत्यु ने अन्ततः आप को हम से अलग कर दिया और यह पुस्तक छपने भी न पाई थी कि ख़ुदा तआला ने आप को वापस बुला लिया और यह पुस्तक आपके स्वर्गवास के बाद प्रकाशित हुई है)"
>
> "हे मेरे देशवासी भाइयो! यह संक्षिप्त पुस्तक जिसका नाम है "पैग़ाम-ए-सुलह" सम्मान के साथ

आप सज्जनों को प्रस्तुत की जाती है और सच्चे दिल के साथ दुआ की जाती है कि शक्तिमान ख़ुदा आप सज्जनों के हृदयों में स्वयं इल्हाम करे और हमारी हमदर्दी का राज़ आप के हृदयों पर खोल दे ताकि आप इस मित्रवत् उपहार को किसी विशेष मतलब और व्यक्तिगत उद्देश्य पर आधारित न समझें।

(यह न समझें कि मैं अपने मतलब से कोई बात कह रहा हूँ। शुद्ध रूप से आप की भलाई तथा आपकी प्रेम भावना से विवश होकर मैं यह आप को लिख रहा हूँ) -

"प्रियजन! आख़िरत (परलोक) का मामला तो सामान्य लोगों पर प्राय: गुप्त रहता है और परलोक का राज़ उन्हीं पर खुलता है जो मरने से मरते हैं, परन्तु दुनिया की नेकी और बदी (बुराई) को प्रत्येक दूरदर्शी बुद्धि पहचान कर सकती है।

यह बात किसी से छुपी नहीं कि एकता एक ऐसी चीज़ है कि वे विपत्तियाँ जो किसी प्रकार दूर नहीं हो सकतीं वे एकता से हल हो जाती हैं। (अर्थात् परस्पर प्रेम और मुहब्बत के साथ रहने के परिणामस्वरूप)

अत: एक बुद्धिमान से संभव नहीं कि एकता की बरकतों से स्वयं वंचित रखे। हिन्दू और मुसलमान इस देश में दो ऐसी क़ौमें हैं कि यह एक असंभव विचार है कि किसी तरह उदाहरणतया

हिन्दू एकत्र होकर मुसलमानों को इस देश से बाहर निकाल देंगे या मुसलमान इकट्ठे होकर हिन्दुओं को देश से निष्कासित कर देंगे। बल्कि अब तो हिन्दू मुसलमानों का परस्पर चोली-दामन का साथ हो रहा था। यदि एक पर कोई तबाही आए तो दूसरा भी उस में शामिल हो जायेगा और यदि एक क़ौम दूसरी क़ौम को केवल अपने अहंकार और डींगे मार कर तिरस्कृत करना चाहेगी तो वह भी तिरस्कार के दाग से नहीं बचेगी, और यदि कोई उनमें से अपने पड़ोसी की हमदर्दी में असमर्थ रहेगा तो उसकी हानि वह स्वयं भी उठाएगा। जो व्यक्ति तुम दोनों क़ौमों में से दूसरी क़ौम की तबाही की चिन्ता में है उसका उदाहरण उस व्यक्ति का सा है जो शाख (टहनी) पर बैठ कर उसी को काटता है। आप लोग ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से शिक्षित भी हो गए अब बैर को त्याग कर प्रेम में उन्नति करना शोभनीय है और निर्दयता को छोड़कर सहानुभूति ग्रहण करना आपकी बुद्धिमत्ता के यथा योग्य है। संसार के कष्ट भी एक रेगिस्तान की यात्रा है तो बिलकुल गर्मी और सूर्य के ताप के समय की जाती है। अतः इस दुर्गम मार्ग के लिए आपसी एकता के उस शीतल जल की आवश्यकता है जो सी जलती हुई अग्नि को ठण्डा कर दे तथा प्यास के समय मरने से बचाए।

ऐसे संवेदनशील समय में यह लेखक आप को सुलह के लिए बुलाता है जबकि दोनों को सुलह की बहुत आवश्यकता है। दुनिया पर तरह-तरह की विपत्तियाँ आ रही हैं, भूकम्प आ रहे हैं, अकाल पड़ रहा है और ताऊन ने भी अभी पीछा नहीं छोड़ा। और जो कुछ ख़ुदा ने मुझे खबर दी है वह भी यही है कि यदि दुनिया अपने दुष्कर्मों से नहीं रुकेगी और बुरे कामों से तौबः नहीं करेगी तो दुनिया पर कष्ट से कठोर विपत्तियां आएंगी।

(रूहानी खज़ायन, पैग़ाम-ए-सुलह, जिल्द-23, पृष्ठ-443,444)

इस नसीहत को पूरे एक सौ वर्ष गुज़रे हैं और यह आपकी अन्तिम नसीहत थी और यही नसीहत मैं आज आप को दोहरा कर बार-बार आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ इस दुखी दिल के साथ कि इस नसीहत पर इन्सान ने कोई कान नहीं धरे तथा हिन्दुस्तान आज भी उसी प्रकार फ़िर्क़ों का शिकार है, उसी प्रकार परस्पर अल्प विश्वास का शिकार है उसी प्रकार एक-दूसरे से ख़तरे महसूस कर रहा है जिस प्रकार इस से पहले था बल्कि शायद कई परिस्थितियों में और भी अधिक परेशान करने वाली परिस्थितियां प्रकट हो चुकी हैं। तो जिस प्रकार मेरे आका-व-मौला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक सौ साल पहले क़ादियान के मंच से हिन्दुस्तान को नेक नसीहत के द्वारा सुलह तथा एकता का निमन्त्रण दिया था।

आज मैं सौ साल के बाद आप के तुच्छ दास की हैसियत से आप सब को उसी भाईचारे और एकता की ओर बुलाता हूँ।

यदि इस प्रकार की पूर्ण सुलह के लिए हिन्दुस्तान और आर्य सज्जन

तैयार हों कि वे हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुदा का सच्चा नबी मान लें और भविष्य में अपमान करना और झुठलाना छोड़ दें तो मैं सब से पहले इस इक़रार नामः पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार हूँ कि हम अहमदी सिलसिले के लोग हमेशा वेद के सत्यापन करने वाले होंगे और वेद तथा उसके ऋषियों का सम्मान और प्रेम पूर्वक नाम लेंगे।

(रूहानी खज़ायन, पैग़ाम-ए-सुलह, जिल्द-23, पृष्ठ-443,444)

यह वह बात है जिसके बारे में अधिक विस्तार से आपको समझाना चाहता हूँ। दुनिया में अमन फैलाने की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका धर्म को अदा करनी चाहिए। परन्तु बहुत बड़ा दुर्भाग्य है कि सब से अधिक अशान्ति फैलाने के लिए धर्म को इस्तेमाल किया जाता है। विचित्र बात है कि एक ख़ुदा के बन्दे, एक ख़ुदा के पुजारी केवल इसलिए कि किसी दूसरे का ख़ुदा की इबादत करने का रंग भिन्न है या उसके धर्म की शिक्षा के विवरण में मतभेद है। वह अल्लाह के नाम पर, रब्ब के नाम पर, वाहे गुरू के नाम पर, परमेश्वर के नाम पर एक-दूसरे के क़त्ल की शिक्षा दें। एक-दूसरे का ख़ून चूसने की शिक्षा दें। यह कैसा धर्म है, वह कैसा ख़ुदा है जो इस प्रकार की शिक्षा दे सकता है। तो धर्मों की दुनिया में एक नवीन क्रान्ति के पैदा करने की आवशयकता है समस्त धार्मिक लीडरों को विशेषत: जो हिन्दुस्तान में कोई न कोई प्रभाव रखते हैं यह बताने की आवश्यकता है कि आप के हाथ में है, आप चाहें तो अपनी क़ौम का भाग्य बना डालें, आप चाहें तो अपनी क़ौम को बिगाड़ दें और यदि आप ने क़ौम का भाग्य बिगाड़ा तो केवल मनुष्यों को मनुष्यों से नहीं काटेंगे बल्कि मनुष्यों को ख़ुदा से भी काट देंगे और अपना रिश्ता भी हमेशा के लिए अपने रब्ब से और अपने रब्ब के बन्दों से आप काट लेंगे। यह वह जिहाद है जिसकी ओर मैं आपको निमन्त्रण देता हूँ

जिसके बारे में आपको अधिक यह बताऊंगा कि हर धर्म की यही शिक्षा है कि इन्सान और इन्सान के अन्दर प्रेम पैदा किया जाए और ख़ुदा तथा इन्सान के अन्दर प्रेम पैदा किया जाए।

यदि धार्मिक पथ-प्रदर्शक ख़ुदा के नाम पर किसी को नफ़रत की शिक्षा देते हैं तो दो परिणामों में से एक अनिवार्य तौर पर निकालना पड़ेगा। या वह धर्म झूठा है या वह धार्मिक पथ-प्रदर्शक झूठा है, एक ही समय में दोनों सच्चे नहीं हो सकते। परन्तु मैं आपको बताता हूँ। यद्यपि मैं मुसलमान हूँ और मुसलमान की ही हैसियत से मैंने वास्तव में इस रहस्य को पाया है कि दुनिया के समस्त धर्म अपने प्रारंभ में सच्चे थे और एक भी नहीं है जो झूठा ठहराया जा सके। बाद में झूठों ने उनको परिवर्तित किया तथा आपके सामने है कि कैसे परिवर्तित किया करते हैं। जब सूर्य के नाम पर अंधकारों को फैलाने की कोशिश की जाए। जब सब से बढ़कर प्रेम करने वाले ख़ुदा के नाम पर नफ़रतों की शिक्षा दी जाए तो इस प्रकार धर्म बिगड़े हैं। इस प्रकार इंसानों और इंसानों की दूरियां बढ़ती हैं, इस प्रकार फ़ासले पैदा होते हैं। किन्तु याद रखें की दूरियां केवल आपस में नहीं बल्कि ख़ुदा के साथ भी होती चली जाती हैं, क्योंकि वे ख़ुदा के बन्दे जो एक-दूसरे से नफ़रत करते हैं। अल्लाह कभी उन से प्रेम नहीं करता, कभी उन से प्यार नहीं कर सकता तो राजनीतिक लीडरों की फैलाई हुई मुसीबतें तो मानवीय स्तर पर और इस दुनिया के स्तर पर ही तबाही फैलाती हैं। धार्मिक पथ-प्रदर्शक यदि मुसीबतें फैलाने लगें तो धर्म भी हाथ से जाता है और दुनिया भी हाथ से जाती है। दोनों स्थानों की तबाही है।

मैंने जहाँ तक धर्मों का अध्ययन किया है। मैंने हर स्थान पर प्रारंभ में अत्यन्त पवित्र प्रेम और प्यार तथा एकता की शिक्षा ही पाई है। इस

सन्दर्भ में मैं आपके सामने सिक्ख और हिन्दू पवित्र किताबों के कुछ हवाले रखता हूँ जिस से आपको अनुमान होगा कि वास्तव में हर धर्म का प्रारंभ ख़ुदा के एकेश्वरवाद से हुआ और हर धर्म के सच्चे पथ-प्रदर्शक जो प्रारंभ में थे उन्होंने एक ही ख़ुदा की इबादत की शिक्षा दी है और यह इसलिए आवश्यक भी था कि यदि एक ख़ुदा नहीं तो मनुष्य कभी एक नहीं हो सकता। यदि माताएं भिन्न-भिन्न हो जाएँ तो घरों में फ़साद पड़ जाते हैं। यदि बाप अलग-अलग हों तो रिश्ते टूट जाया करते हैं। खानदानों के मतभेद के साथ नफ़रतें बढ़ जाती हैं। बिरादरियों के मतभेद के साथ दूरियां पैदा होती है यदि यह सब कुछ इस दुनिया में होता है तो कैसे संभव है कि हमारे स्रष्टा और मालिक हमारे पैदा करने वाले हमारे प्रतिपालक भिन्न-भिन्न हों और अब हम इन मूर्खों जैसे स्वप्नों में ग्रस्त रहें कि हम आपस में प्रेम करने लगेंगे। यही कारण है कि समस्त धर्मों ने प्रारंभ में हमेशा एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा दी है। चूँकि पंजाब में अधिक संख्या हिन्दुओं तथा सिक्खों की है और मैं उन्हीं के देश में इस समय आप से बात कर रहा हूँ। इसलिए मैंने केवल सिक्ख और हिन्दू पुस्तकों से कुछ हवाले निकाले हैं ताकि आप को स्मरण कराऊँ कि आप के बुज़ुर्ग और ख़ुदा तक पहुंचे हुए लोग आप से क्या आशा रखते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में फ़रमाया कि :-

मानवजाति से सहानुभूति एकेश्वरवाद के बिना संभव नहीं और यही वह संदेश है जो मैं स्वयं आप के धर्मों की भाषा में आप तक पहुँचाना चाहता हूँ।

सिक्ख मत आज से पांच सौ वर्ष पहले हज़रत बाबा गुरू नानक साहिब के द्वारा अस्तित्त्व में आया और पहले पांच गुरूओं की शिक्षाएं

हमारे सामने गुरू ग्रन्थ साहिब के रूप में मौजूद हैं और बहुत ही प्यारी शिक्षाएं हैं ऐसी कि जिन को पढ़कर न केवल यह कि रूह भाव-विभोर हो जाती है बल्कि धर्मों की एकता का विश्वास बढ़ता जाता है और उन शिक्षाओं की मांग से मनुष्य इस विश्वास पर शत प्रतिशत स्थापित हो जाता है कि वही एक ख़ुदा है जो हर स्थान पर प्रकट हुआ है और समस्त धर्म अपनी वास्तविक हालतों में एक ही ख़ुदा की ओर मार्ग-दर्शन करने वाले हैं।

मुझे अफ़सोस है कि मुझे गुरमुखी पढ़ने की महारत नहीं और मैं पसन्द नहीं करता कि आप की धार्मिक शिक्षा की पवित्र इबारतों को ग़लत रंग में पढ़कर आप के सामने रखूँ। इसलिए मुझे क्षमा कीजिए यदि मैं अनुवाद को ही पर्याप्त समझूँ।

गुरू ग्रन्थ साहिब पृष्ठ-188 पौड़ी मुहल्ला पंचम में यह इबारत दर्ज है -

"जो अपने वाहे गुरू अर्थात् ख़ुदा तआला की
इबादत नहीं करते उनका जीवन किसी काम का
नहीं वे अपनी मौत स्वयं मर जाते हैं।"

यह वह पवित्र नसीहत है जिसने मुझे पवित्र क़ुर्आन की आयत का यह भाग याद कराया -

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ

(अल्मोमिन - 61)

गुरू अर्जुन देव जी ने बहुत बड़ा उपकार किया है न केवल सिक्ख क़ौम पर बल्कि दूसरे मनुष्यों पर भी कि पहले पांच गुरूओं की पवित्र शिक्षाओं को इस पवित्र किताब के रूप में सुरक्षित कर दिया

एक अन्य स्थान पर लिखा है -

"आप गंवाइए तां शिव पाइए और कैसी चतुराई।

(तैलंग मोहल्ला पहला गुरू ग्रन्थ साहिब पृष्ठ-722)

अनुवाद :- "अपने आप को क़ुर्बान कर के फिर ख़ुदा मिलता है। इससे बढ़कर और क्या बुद्धि की बात हो सकती है।"

हज़रत संस्थापक सिलसिला अहमदिया ने एक शे'र में इस विषय को यों वर्णन किया :-

आशिक़ जो हैं वो यार को मर-मर के पाते हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन, बराहीन अहमदिया भाग-पंचम, जिल्द-21, पृष्ठ-17)

सुब्हान अल्लाह कैसा बराबर कलाम है जो ख़ुदा वाले हैं उनकी सोचें भी एक होती है, उनके कलाम भी एक जैसे होते हैं।

आशिक़ जो हैं वे यार को मर-मर के पाते हैं
जब मर गए तो उसकी तरफ़ खींचे जाते हैं
जो मर गए उन्हीं के नसीबों में है हयात
इस राह में ज़िन्दगी नहीं मिलती बजुज़ ममात

(रूहानी ख़ज़ायन, बराहीन अहमदिया भाग-पंचम, जिल्द-21, पृष्ठ-17)

जो मर गए उन्हीं को जीवन प्राप्त होता है और मौत के बिना इस राह में जीवन प्राप्त नहीं हो सकता।

आगे गुरू ग्रन्थ साहिब पृष्ठ-9, आसा मुहल्ला पहला में यह इबारत दर्ज है -

साचे नाम की लागे भूक
उत भूख खाए खाए चलिए धूक

सच्चे ख़ुदा की मुझे भूख लगती है। सुब्हान अल्लाह कैसा कलाम है। जिस प्रकार भूख में मनुष्य तड़पता है रोटी के लिए जितनी देर होती चली जाए उतनी ही अधिक उसकी मांग बढ़ती जाती है और फिर जब

भोजन से मनुष्य अपनी भूख मिटाता है तो वह भोजन जीवन का अंश बन जाता है। उस से शुद्ध ख़ून पैदा होता है उस से शरीर भी पोषण एवं विकास पाता है, दिल को भी शक्ति मिलती है, मस्तिष्क को दृढ़ता मिलती है तो जो ख़ुदा से प्रेम करने वाले लोग हैं उनके लिए ख़ुदा की याद बिल्कुल वैसा ही आदेश रखती है जैसा भूख के लिए अच्छा भोजन।

फ़रमाते हैं -

सच्चे ख़ुदा के नाम की मुझे भूख लगती है और मेरे सब कष्ट, संकट ख़ुदा के नाम की भूख से दूर हो जाते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इससे मिलते-जुलते विषय को यों वर्णन करते हैं :-

हैं तेरी प्यारी निगाहें दिलबरा एक तेग़े तेज़
जिस से कट जाता है सब झगड़ा ग़मे अग़्यार का

(रूहानी ख़ज़ायन, सुर्मा चश्म आर्य, जिल्द-2, पृष्ठ-52)

हे मेरे मौला! तेरी जो निगाहें हैं वे मेरे लिए एक ऐसी तेज़ धार वाली तलवार बन जाती हैं जिस से दुश्मनों के वे ग़म जो मुझ पर डाले जाते हैं वे सब कट कर समाप्त हो जाते हैं। अर्थात् ग़ैर से में पूर्ण रूप से पृथक और लापरवाह हो जाता हूँ और मुझे केवल तेरे प्यार के कारण अमन का जीवन प्राप्त होता है।

जे होए नमानी सिव कमावे
तान प्रियतम होवे मन प्यारी

(आसा मुहल्ला पंचम गुरू ग्रन्थ पृष्ठ-377,378)

अनुवाद :- अपने अन्दर से अहंकार समाप्त कर दो फिर ख़ुदा को याद करो तो ख़ुदा तआला के प्रिय बन जाओगे।

हज़रत बानी-ए-सिलसिला अहमदिया फ़रमाते हैं :-

जो ख़ाक में मिले उसे मिलता है आश्ना
ऐ आज़माने वाले! यह नुस्ख़ा भी आज़्मा
छोड़ो ग़ुरूरो-किब्र को कि तक़्वा इसी में है
हो जाओ ख़ाक़ मर्ज़िए मौला इसी में है।

(रूहानी ख़ज़ायन, सुर्मा चश्म आर्य, जिल्द-2, पृष्ठ-52)

अब बताइए नाम से क्या अन्तर पड़ता है। यदि दिलों के प्यार अल्लाह की तरफ़ एक ही प्रकार से बह रहे हों। यदि मानवजाति को एक ही प्रकार से ख़ुदा की ओर आने की सच्ची शिक्षा दी जा रही हो तो यही तो उद्देश्य है। नाम बदलने से इस में क्या अन्तर पड़ता है।

हज़रत कबीर भगत साहिब को भी सिक्ख जगत में बड़े आदर-सम्मान के साथ देखा जाता है गुरू ग्रन्थ साहिब में उनके भी हवाले मिलते हैं। एक स्थान पर लिखा है -

अव्वल अल्लाह नूर उपाय क़ुदरत के सब बन्दे
एक नूर ते सब जग उपजिया कौन भले कौन मन्दे

(गुरू ग्रन्थ साहिब पृष्ठ-1349, प्रभाती राग)

अर्थात् प्रथम अस्तित्त्व ख़ुदा का है और उसके नूर तथा क़ुदरत के सब बन्दे हैं और एक ही नूर से सारी क़ायनात (ब्रह्माण्ड) अस्तित्त्व में आई है। इसलिए किसी को अच्छा और किसी को बुरा कहना ग़लत है। सबसे प्रेम करना ख़ुदा से प्रेम करना है।

पवित्र क़ुर्आन में प्रचुरता के साथ ऐसी आयतें मिलती हैं जिन में इसी विषय को विभिन्न रंग में वर्णन किया गया -

اَللّٰہُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (अन्नूर - 36)

देखो! अल्लाह ही है जो केवल मानवजाति का नहीं बल्कि आसमानों

और पृथ्वी का नूर है हर जगह वह नूर मिलता है एकेश्वरवाद ही में वास्तव में प्रेम की पूर्ण शिक्षा पाई जाती है जिसका एक ख़ुदा से संबंध स्थापित हो जाए जो ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) को समझ जाए, वह आपस में एक-दूसरे से नफ़रत का विचार भी मन में नहीं ला सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस विषय को इस प्रकार वर्णन करते हैं -

"ख़ुदा ज़मीन और आसमान का नूर है अर्थात् प्रत्येक नूर जो बुलन्दी और नीचाई में दिखाई देता है चाहे वह रूहों में है चाहे शरीरों में और चाहे व्यक्तिगत है और चाहे किसी सहारे से और चाहे बाहरी है चाहे आन्तरिक और चाहे मानसिक है चाहे प्रत्यक्ष उसी के फैज़ का अनुदान है। यह इस बात की ओर संकेत है कि समस्त लोकों के प्रतिपालक का सामान्य फैज़ प्रत्येक वस्तु पर छा रहा है और कोई उसके वरदान से खाली नहीं।"

(रूहानी ख़ज़ायन, बराहीन अहमदिया, पृष्ठ-181 हाशिया)

यह धूप देखें समस्त संसार में एक ही प्रकार से चमकती है। यह वर्षा एक ही प्रकार के फैज़ (नेअमत) हर जगह बरसाती है। यह एक ही हवा है जिससे हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध सब जीवन की शक्ति पाते हैं। तो एक ख़ुदा ने सब पर किस प्रकार एक सामान्य फैज़ जारी कर रखा है, तो हम कैसे उस ख़ुदा से संबंध जोड़ सकते हैं यदि हम एक दूसरे से नफ़रत की शिक्षा दें।

हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस सिलसिले में एक बहुत ही प्यारी तथा बहुत ही गहरी हिक्मत की बात हमारे सामने रखी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया -

माँ के पेट के अन्दर जिस थैली में बच्चा जन्म लेता है अरबी में उसका नाम रहम है और रहम के अस्तित्त्व ही से रहमान ख़ुदा का

नाम निकला है। जो मनुष्य रिश्तों से संबंध काटता है दुनिया के रिश्तों से संबंध काटता है, वह रहमान (कृपाल) ख़ुदा से भी अपना संबंध काट लेता है।

अत: यह वह शिक्षा है जो आप को दुनिया के हर धर्म में मिलेगी। इसलिए पवित्र क़ुर्आन ने यह दावा किया कि

فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अल बय्यिनः - 4)

कि यह वह कलाम है जो दुनिया की शिक्षाओं से बिल्कुल अजनबी शिक्षा देने नहीं आया बल्कि उस में समस्त संसार की बाक़ी और जीवित रहने वाली शिक्षाओं के नमूने देखोगे। गुरू ग्रन्थ साहिब श्लोक वारां मुहल्ला प्रथम, पृष्ठ-1412 में वे बहुत ही प्यारे शे'र दर्ज हैं।

जो तौ प्रेम खेलन का चाव
सिर धर तली गली मेरी आओ
रात मारग पैर घरी जे
सिर दीजे कान न कीजे,

अनुवाद :- यदि ख़ुदा से प्रेम करने की इच्छा है तो उस कूचे में अपना सर हथेली में रख कर लाओ। यदि उस मार्ग पर आपको चलना है तो फिर अपना सर देने से बचाव न करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं -

तेरे कूचे में किन राहों से आऊं
वह ख़िदमत क्या है जिससे तुझ को पाऊं
मुहब्बत है कि जिससे खींचा जाऊं
ख़ुदाई है ख़ुदी जिससे जिलाऊं

(दुर्रे समीन पृष्ठ-50, प्रकाशक नज़ारत इशाअत रब्वाह, ज़ियाउलइस्लाम प्रेस)

जब तक मैं अपने अहंकार को न जला दूँ मैं तुझ तक मार्ग ही नहीं

पा सकता। परन्तु मेरे अहंकार को भी जलाना तो तेरे वश में है, ख़ुदाई ही है जो अहंकार को जला सकती है, इसके बिना मनुष्य का अहंकार मिट नहीं सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक "सतबचन" में बड़ी प्रचुरता से सिक्ख बुज़ुर्गों के हवाले दर्ज किए और यही परिणाम निकाला है कि सिक्ख धर्म की शिक्षाएं तथा इस्लाम की शिक्षाओं में कोई अन्तर नहीं है और एक ही नूर के फूटने वाले झरने हैं। हम क्यों एक-दूसरे का विरोध करें, हम क्यों एक दूसरे से दूर रहें। परन्तु आप ने यह परिणाम केवल सिक्खों और मुसलमानों के बारे में ही नहीं बल्कि हिन्दू इज़्म और इस्लाम के बारे में भी निकाला और आप ने बहुत खुल कर यह निर्देश दिया कि जब तक दुनिया के समस्त धर्म इस बुनियादी विश्वास की ओर वापस नहीं आते कि वे सारे एक सच्चे ख़ुदा के सागर से फूटे हैं और उस एक ही सच्चे ख़ुदा के नूर से उन्होंने नूर पाया है उस समय तक दुनिया में कभी सच्चा अमन स्थापित नहीं हो सकता।

बहुत से हवाले हैं परन्तु चूँकि समय की कठिनाई है, इसलिए मैं छोड़ रहा हूँ। एक पुस्तक है - "जपजी-व-सिख मुनि साहिब" यह पुस्तक सिक्खों के गीत हैं। अल्लाह तआला का प्रेम और उसके स्मरण में। इसका अनुवाद ख़्वाजा दिल मुहम्मद साहिब ने उर्दू नज़्म में किया हुआ है। इसमें से मैं कुछ शे'र आपको सुनाता हूँ -

एक ओन्कार ख़ुदा है वाहिद सच्चा जिसका नाम
करता-धरता दुनिया का बेडर बेलाग मदाम
मौत से बाला पाक जन्म से क़ायम अपने आप
अपने गुर की रहमत से तू नाम उसी का जाप
सच्चा रोज़े अज़ल से पहले सच्चा रोज़े अज़ल भी वह

सच्चा है वह आज भी नानक सच्चा होगा कल भी वह

{जप जी साहिब-व-सिक्ख मुनि साहिब पृष्ठ-3 (ख़्वाजा दिल मुहम्मद साहिब) आज़ाद बुक डिपो हाल बाज़ार अमृतसर}

अब यह शिक्षा पढ़ने के बाद दिल स्वयं कहने वाले के प्रेम में भी उछलता है और ख़ुदा-ए-वाहिद के लिए भी उसके दिल में एक असीम इश्क़ की भावना जाग उठती है, और यह वह कलाम है जो हर मुसलमान को पवित्र क़ुर्आन की अनेकों आयतों की याद दिलाता है। जिन में इसी विषय को अरबी में वर्णन किया गया है अत: कलाम एक है और एक ही प्यारे की ओर ले जाने वाला है तो उस की भाषा कुछ और हो इस से क्या अन्तर पड़ता है। क्या इसके परिणामस्वरूप हमें एक-दूसरे से लड़ना चाहिए और एक-दूसरे से नफ़रत करनी चाहिए। धार्मिक मतभेद अपने स्थान पर परन्तु हर धर्म की शिक्षा बुनियादी तौर पर मनुष्य को मनुष्य से क़रीब करने के लिए आई है और यह दावा करती है कि यदि किसी धर्म ने मनुष्य को मनुष्य के क़रीब न किया तो वह मनुष्य को ख़ुदा के भी क़रीब नहीं करेगा। यह एक ऐसी अटल सच्चाई है जिस में कभी आप कोई परिवर्तन नहीं देखेंगे। जो मनुष्य ख़ुदा के बन्दों का न हो सके वह ख़ुदा का नहीं बन सकता। तो इस लिए मैं आपको ख़ुदा के नाम पर यह नसीहत करता हूँ कि इन्सानियत की शिक्षा पर ज़ोर दें। यही हर धर्म का वह अन्तिम दाव है जिसके द्वारा शैतानियत को पराजित किया जा सकता है। यदि इन्सानियत को जीवित न किया जाए तो किसी मनुष्य में शैतानियत मर नहीं सकती। वह हमेशा उसके साथ रहेगी और हमेशा उसके जीवन को नर्क बनाती चली जाएगी।

"जप जी" के एक और स्थान से ख़्वाजा दिल मुहम्मद साहिब ने जो अनुवाद किया है वह यों है -

गाए कौन ख़ुदा की क़ुदरत ताब यह किस इन्सान में है
गाए कौन ख़ुदा की रहमत माहिर कौन निशान में है
गाए कौन ख़ुदा की अज़्मत आलीशान वक़ार उसका
गाए कौन ख़ुदा की हिक्मत मुश्किल सोच विचार उसका
गाए कौन उसे जो तन को, ज़ीनत देकर ख़ाक बनाए
गाए कौन उसे जो पैदा करके मारे और जिलाए
गाए कौन उसे जो हमसे पास भी है और दूर भी है
गाए कौन उसे जो हाज़िर नाज़िर पाक हुज़ूर भी है
ख़तम न होंगी उसकी बातें सारा हाल बयान न हो
वस्फ़ करोड़ों गाएँ करोड़ों, पूरी लेकिन शान न हो
लेने वाले थक जाते हैं दाता देता जाता है
जुग-जुग में हर खाने वाला उसकी नेमत खाता है
हुक्म से अपने हाकिम ने दुनिया को राह दिखाई है
ख़ुद आनन्द रहे वह नानक
कैसी बेपरवाही है।

(जप जी-व-सिक्ख मुनि साहिब, पृष्ठ-7 पौड़ी नम्बर 3,
प्रकाशक- आज़ाद बुक डिपो हाल बाज़ार अमृतसर)

अब मैं आप को पवित्र क़ुर्आन की कुछ आयतों के छोटे-छोटे टुकड़े सुनाता हूँ जिस से आप को याद आएगा कि कहाँ वह शिक्षा बिल्कुल बराबर थी और एक शिक्षा दूसरे की ओर मार्ग-दर्शन कर रही है, इसी लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया कि हज़रत गुरू बाबा नानक पवित्र क़ुर्आन से प्रेम करने वाले थे तथा पवित्र क़ुर्आन का अध्ययन करते थे और इस बात पर यह फ़रमाया कि इस से तुम्हारे और हमारे मध्य प्रेम पैदा होना चाहिए न कि नफ़रत। परन्तु अजीब बात है

कि लोग धर्म को छोटे स्तर पर ले आते हैं। विशाल हौसलों के स्थानों की बजाए संकीर्णता में धर्म को खींच लाते हैं। उसके कारण ग़लत फहमियां पैदा होते हैं। अब सुनिए पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है -

(शूरा - 12) لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ

उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह बहुत सुनने वाला और देखने वाला है।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا (अल क़हफ़ - 110)

तू उन्हें कह (कि) यदि (प्रत्येक) समुद्र मेरे रब्ब की बातों (के लिखने) के लिए स्याही बन जाता तो मेरे रब्ब की बातों के समाप्त होने से पहले (प्रत्येक) समुद्र (का पानी) समाप्त हो जाता यद्यपि (उसे) अधिक करने के लिए हम इतना (ही) और (पानी समुद्र में) ला डालते यह वही विषय है जो इससे पहले मैं आपको दूसरे शब्दों में पढ़कर सुना चुका हूँ।

(यूनुस - 57) هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ

वही है जो जीवित करता है और वही है जो मारता है और फिर उसी की ओर तुम्हें लौटाया जाएगा।

وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ (अलमाइदह - 89)

और जो कुछ अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए पैदा किया है। इस जीवन में से हलाल (वैध) और पवित्र (चीज़ों) को खाओ और अल्लाह से डरो तथा उसका तक़्वा (संयम) ग्रहण करो। जिस पर तुम ईमान लाए हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं -

अद्भुत है वह ख़ुदा जो हमारा ख़ुदा है। कौन है जो उसके समान

है, और अद्भुत हैं उस के काम कौन है जिस के काम उस के समान हैं वह सर्वशक्तिमान है।

(रूहानी ख़ज़ायन, नसीमे दावत, जिल्द-19, पृष्ठ-435)

अन्त में इस विषय को समाप्त करने से पहले तथा इसके पहले मैं इस बारे में हिन्दू शिक्षा नमूने के तौर पर आप के सामने रखूं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक लेख जो ख़ुदा तआला से प्रेम और उसकी तौहीद की अभिव्यक्ति के लिए है आपके सामने रखता हूँ। फ़रमाते हैं :-

"ख़ुदा अपनी समस्त ख़ूबियों की दृष्टि से भागीदार रहित, एक है उसमें कोई भी दोष नहीं। वह संग्रह है सम्पूर्ण विशेषताओं का और द्योतक है समस्त पवित्र क़ुदरतों का और स्रोत है सम्पूर्ण सृष्टि का और उद्गम है समस्त वरदानों का और स्वामी है समस्त प्रतिफल एवं दण्ड का और लौटने का स्थल है समस्त बातों का और निकट है बावजूद दूरी के और दूर है बावजूद निकट होने के। वह सब से ऊपर है परन्तु नहीं कह सकते कि उसके नीचे कोई और भी है और वह सब वस्तुओं से अधिक गुप्त है परन्तु नहीं कह सकते कि कोई और उस से अधिक प्रकट है, वह जीवित है अपने अस्तित्त्व से और प्रत्येक वस्तु उस के साथ जीवित है वह क़ायम (स्थापित) है अपने अस्तित्त्व से और प्रत्येक वस्तु उस के साथ स्थापित है। उसने प्रत्येक वस्तु को उठा रखा है और कोई वस्तु नहीं जिस ने उस को उठा रखा हो। कोई वस्तु नहीं जो उसके बिना स्वयं पैदा हुई है या उसके बिना स्वयं जीवित रह सकती है। वह प्रत्येक चीज़ को

> घेरे हुए है परन्तु नहीं कह सकते कि कैसा घेरा है। वह आकाश और पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु का प्रकाश (नूर) है और प्रत्येक प्रकाश उसी के हाथ से चमका और उसी के अस्तित्त्व का प्रतिबिम्ब है। वह समस्त लोकों का प्रतिपालक है। कोई रूह (आत्मा) नहीं जो उस से पोषण न पाती हो और स्वयंभू हो। किसी रूह की कोई शक्ति नहीं जो उस से न मिली हो और स्वयंभू हो।"

(रूहानी ख़ज़ायन, लेक्चर लाहौर, जिल्द-20, पृष्ठ-152,153)

अत: दुनिया के जितने भी धर्म हैं वे वास्तव में एक ख़ुदा की ओर बुलाने वाले हैं तथा एक ख़ुदा से यदि सच्चा संबंध स्थापित हो जाए तो यही रहस्य है धर्मों की धर्मों से सुलह करवाने का। इसके अतिरिक्त अन्य कोई तरीक़ा नहीं। ख़ुदा का ओर बन्दों को वापस लेकर जाएँ।

ख़ुदा स्वयं बन्दों को आपस में मिला देगा। जो ख़ुदा तक पहुँचते हैं वही पहुँचते हैं जो पहले से ही बन्दों से मिलकर ऊपर जाते हैं। जो बन्दों से संबंध तोड़ कर ख़ुदा की ओर जाते हैं उनके और ख़ुदा के बीच दूरियां सदैव बढ़ती रहती हैं। यह केवल नफ़्स का धोखा है। इसलिए अन्तिम बार फिर मैं आपको यह नसीहत करता हूँ कि हे हमारे सिक्ख भाइयो! जिन्होंने यहाँ बहुत ही उच्च स्तर का सदव्यवहार किया है, असीम प्रेम के साथ, खुली बाहों के साथ, हमारा स्वागत किया और जहाँ-जहाँ जिन-जिन गलियों से मैं गुज़रा हूँ वहां मैंने सिक्खों को दरवाज़े के सामने खड़े होकर बड़े प्यार और मुहब्बत से हाथ हिलाते देखा, अपने घरों में बुलाते देखा, यहाँ तक कि एक खानदान के एक बहुत ही छोटे से प्यारे बच्चे ने कोठे पर चढ़कर यों हाथ जोड़कर यह मिन्नत-समाजत की कि हमारे घर अवश्य आएँ। अत: मैं उनके घर

गया, उनके यहाँ दूध पिया। ये सारी बातें सोचते हुए मुझे ख्याल आया कि ख़ुदा की रहमत का दूध तो सब के लिए बराबर है, ख़ुदा की मुहब्बत का दूध ही है जो सब मनुष्यों के पोषण तथा विकास के लिए एकमात्र दूध है। इसके बिना कोई जीवन नहीं है। तो अपने मतभेदों को अपनी जगह रखिए, परन्तु तौहीद (एकेश्वरवाद) को अपने अन्दर वह मुहब्बत पैदा करने का अवसर दीजिए, वह हार्दिक जोश पैदा करने का अवसर दीजिए जिसके बाद रंगों का मतभेद भी हमें दूर नहीं कर सकता, भौगोलिक मतभेद भी हमें दूर नहीं कर सकता, धार्मिक मतभेद भी हमें दूर नहीं कर सकता। एक ख़ुदा का प्रेम है जो हमें एक कर सकता है और मैंने स्वयं उसके अपनी आँखों से बहुत ही प्रिय दृश्य देखे हैं। अल्लाह करे यह क़ादियान जिसको ख़ुदा ने दारुलअमान (शान्ति का घर) कहा था सदैव दारुलअमान रहे और इसका अमन दुनिया मैं फैलता चला जाए। इस अमन को दुनिया में फैलाने में आप सिक्ख भी हमारी सहायता करें। और आप हिन्दू भी हमारी सहायता करें। हम भी आपके साथ हाथ मिलाकर दुनिया को यह सन्देश दें कि हे दुनिया वालो आओ और इस क़ादियान की बस्ती से अमन से जीवित रहने के गुर सीख लो, अमन से जीवित रहने की अदाएं सीख लो। हम आज सब मिलकर तुम्हें अमन की दुनिया की ओर बुलाते हैं तथा यह दुनिया एक ख़ुदा की दुनिया है। इस दुनिया में आए बिना वास्तव में अमन प्राप्त नहीं हो सकता।

अब मैं हिन्दू धर्म से तौहीद (एकेश्वरवाद) से कुछ शिक्षाओं के नमूने आपके सामने रखता हूँ। गीता में एक श्लोक है और उसका अनुवाद "दिल की गीता" के नाम से प्रकाशित किया गया है। उसके अध्याय-8, श्लोक 20 में लिखा है -

परे ग़ैब से भी है एक ज़ात ग़ैब
वह हस्ती फ़ना का नहीं जिसमें ऐब
किसी की न कुछ बात बाक़ी रहे
फ़क़त एक वही ज़ात बाक़ी रहे

पवित्र क़ुर्आन इस विषय का वर्णन करते हुए फ़रमाता है -

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ

(अर्रह्मान - 27,28)

जो कुछ भी इस दुनिया में है वह अवश्य ही मिट जाएगा और केवल वही बचता है जिसकी ओर तेरे प्रताप और सम्मान वाले ख़ुदा का ध्यान हो।

अर्थात् ख़ुदा के ध्यान से हम जीवित हैं। यदि यह ध्यान मुंह फेर ले तो हम बहरहाल मर जाएंगे। न ज़ाहिरी तौर पर जीवित रह सकते हैं न रूहानी तौर पर।

फिर एक श्लोक "दिल की गीता" पुस्तक से ही मैं आपके सामने रखता हूँ। अध्याय 8, श्लोक 22 में लिखा है -

जो करते हैं ख़ालिस इबादत मेरी
को यकदिल हों जी में न रखें दुई
करूं हाजतें उनकी पूरी तमाम
वह मेरी हिफ़ाज़त में हों सुब्हो शाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं -

चाहिए तुझ को मिटाना क़ल्ब से नक़्शे दुई
सर झुका बस मालिके अर्ज़ो समां के सामने

(अलफ़ज़्ल 13 जनवरी 1928ई)

पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ
(मोमिन - 15)

कि इन्कार करने वाले चाहे कैसी ही नफ़रत करें तुम एक ख़ुदा को पूर्ण निष्कपटता पूरी वफ़ा के साथ पुकारा करो।

भगवत गीता के पृष्ठ 365 पर दर्ज है -

"हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है और जो तू भोजन करता है और जो तू होम (हवन) करता है और जो तू दान देता है और जो तू तप अर्थात् रियाज़त करता है वह सब मुझ परमेश्वर के सुपुर्द है।"

फ़क़त मेरी खातिर तू हर काम कर
हवन दान दे सब मेरे नाम पर
तेरा खाना-पीना हो मेरे लिए
तेरा तप से जीना हो मेरे लिए

इस विषय को पवित्र क़ुर्आन ने बहुत ही प्यारे रंग में इस प्रकार वर्णन किया कि हे मुहम्मद! तू यह घोषणा कर दे -

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
(अलअनआम - 163)

कि देखो मैं ख़ुदा का पूरी तरह हो चुका हूँ। मेरी इबादतें और मेरी क़ुर्बानियाँ और मेरा प्रतिदिन का जीना और प्रतिदिन का मरना सब कुछ ख़ुदा के लिए हो चुका है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस विषय को यों वर्णन करते हैं कि :-

"जब मनुष्य का प्रेम ख़ुदा के साथ इस श्रेणी तक पहुँच जाए कि उसका मरना और जीवित

रहना अपने लिए नहीं बल्कि ख़ुदा ही के लिए हो जाए तब ख़ुदा जो हमेशा से प्यार करने वालों के साथ प्यार करता आया है। अपने प्रेम को उस पर उतारता है और उन दोनों प्रेमों के मिलने से मनुष्य के अन्दर एक नूर पैदा होता है जिसको दुनिया नहीं पहचानती और न समझ सकती है और हज़ारों सिद्दीकों (सत्यनिष्ठों) तथा ख़ुदा के चुने हुए लोगों का ख़ून इसलिए हुआ कि दुनिया ने उनको नहीं पहचाना। वे इसीलिए मक्कार और स्वार्थी कहलाए कि दुनिया उनके नूरानी चेहरे को देख न सकी।"

(भाषण जलसा मज़ाहिब पृष्ठ-76)

तो वे लोग जो नूरानी नूरों का विरोध करते हैं और धार्मिक बुज़ुर्गों के ख़ून करने पर तत्पर रहते हैं वे स्वयं ख़ुदा से संबंध काटने के नतीजे में एक अन्धकार की अवस्था में जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं, जिस प्रकार अन्धे को पता नहीं लगता कि सही मार्ग कौन सा है और कभी दीवारों से टकरा जाता है। यही हाल दिल के अन्धों का हुआ करता है, परन्तु जो ख़ुदा से सच्चा प्रेम करते हैं उनको अवश्य नूर प्रदान किया जाता है और उस प्रेम के नतीजे में चाहे किसी धर्म से संबंध रखते हों वे ख़ुदा वालों को दिल की आंख से पहचान लेते हैं तथा यह असंभव है कि ख़ुदा से सच्चा प्रेम करने वाला किसी ख़ुदा से सच्चा प्रेम करने वाले से नफ़रत करे। उसके दिल की आंख बताती हैं कि यह कौन है। वह ऐसा नूर है जो दोनों एक-दूसरे को पहचानते और एक-दूसरे के लिए प्रेम का जोश मारते हैं।

भगवत गीता पृष्ठ-664 पर दर्ज है कि -

"हे अर्जुन! हर प्रकार से इस ईश्वर की शरण
में ही शरणगत हो तो उस मेहरबानी से उच्चतम
अनश्वर शान्ति और स्थान को प्राप्त कर सकेगा।"

तू मल्जा-व-मावा उसी को बना
उसी ज़ात में अपनी हस्ती लगा
तू रहमत में उसकी समा जाएगा
सुकूनो बक़ा उस से पा जाएगा

पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है :-

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ
اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ (अर्रअद - 29)

कि वे लोग जो ईमान लाते हैं और ईमान लाने के बाद तो उनको ख़ुदा की चर्चा में ही सन्तोष मिला करता है, अल्लाह की याद ही से चैन पाते है। फ़रमाया - اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ मनुष्य जो चाहे करे, जिस ओर चाहे दौड़ें मारे, ख़ुदा के ज़िक्र और ख़ुदा के प्रेम के बिना मनुष्य को सन्तोष प्राप्त नहीं हो सकता।

दिल की गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में है -

तू सब धर्म छोड़ और ले मेरी राह
तू मांग आके दामन में मेरे पनाह
तेरे पाप सब दूर कर दूंगा मैं
न ग़मगीन हो मसरूर कर दूंगा मैं

पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है :-

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (अलअन्कबूत - 8)

कि जो लोग ईमान लाए और ईमान के अनुसार उन्होंने अमल किए हम उन की बुराइयों को उन से दूर कर देंगे और जो काम वे करते थे उसके अनुसार उत्तम प्रतिफल जो उनको मिल सकता होगा वह हम उन को देंगे।

समय का ध्यान रखते हुए शेष हवाले छोड़ता हूँ। अब मैं आप को अल्लाह तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) और ख़ुदा के प्रेम के बाद सिक्ख मत में और हिन्दू मत में जो इन्सानी हमदर्दी से संबंधित बातें हैं उनके कुछ नमूने पढ़कर सुनाता हूँ।

गुरू ग्रन्थ साहिब पृष्ठ-1299 मुहल्ला पंचम में है -

पिसर गई सब तात पराई
जब ते साधु संगत मोहे पाई
रहावना को बैर बेगाना
सगल संग हम को बन आई

इसका अनुवाद यह है -

हमारी आस्थानुसार कोई पराया नहीं, सब अपने हैं और न कोई हमारा दुश्मन है। सब से हमारा प्यार और मुहब्बत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं -

"मैं समस्त मुसलमानों और ईसाईयों और हिन्दुओं तथा आर्यों पर यह बात व्यक्त करता हूँ कि दुनिया में कोई मेरा दुश्मन नहीं है मैं मानवजाति से ऐसा प्रेम करता हूँ कि जैसा मेहरबान पिता अपने बच्चों से, अपितु इस से बढ़कर। मैं केवल उन ग़लत आस्थाओं का दुश्मन हूँ जिनसे सच्चाई का ख़ून होता है। मनुष्य की हमदर्दी मेरा कर्त्तव्य है।"

(रूहानी ख़ज़ायन अरबईन नं.1 जिल्द-17 पृष्ठ-344)

फिर गुरू ग्रन्थ साहिब में हज़रत बाबा नानक साहिब का कलाम पृष्ठ-991 मुहल्ला पहला में दर्ज है -

मंदा जाने आप को और भला संसार

अर्थात् मनुष्य स्वयं को कमज़ोर और बुरा जाने तथा समस्त संसार को उत्तम और अच्छा समझे।

विनम्रता की एक बहुत ही पवित्र और उच्चतम श्रेणी की शिक्षा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं -

बदतर बनो हर एक से अपने ख़्याल में
शायद इसी से दख़्ल हो दारुल विसाल में

यदि तुम अपने विचार में हर दूसरे व्यक्ति से स्वयं को बहुत कम तथा निम्न स्तर का समझो तो दूर नहीं, संभव है इसी मार्ग से तुम्हें अल्लाह तआला मिल जाए। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इस युग का इमाम बना कर भेजा तो कारण यह वर्णन किया -

"उसे तेरी विनयपूर्ण राहें पसन्द आईं।"

हे वह व्यक्ति जिसे मैं युग का इमाम बना रहा हूँ इसलिए नहीं कि तू बहुत बड़ा आदमी है, इसलिए कि तूने अपने नफ़्स को बिल्कुल मिटा दिया और ख़ाक हो गया और अपनी हस्ती का कुछ भी रहने नहीं दिया। इस विनय के बाद ख़ुदा बन्दों पर प्रकट हुआ करता है और इसके बिना ख़ुदा का मिलना दुर्लभ अर्थात् असंभव है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसके अतिरिक्त फ़रमाते हैं -

"मनुष्य का केवल यह काम है कि अपने अहंकार पर मौत लाये और उस शैतानी अहंकार को छोड़ दे कि मैं विद्याओं में पोषण प्राप्त हूँ और स्वयं को एक अनपढ़ की तरह समझे और दुआ में

लगा रहे तब तौहीद का प्रकाश उस पर ख़ुदा की ओर से उतरेगा और उसे एक नया जीवन प्रदान करेगा।"

(रूहानी ख़ज़ायन हक़ीक़तुल वह्यी जिल्द-22 पृष्ठ-148)

फिर गुरू ग्रन्थ साहिब पृष्ठ-141 मुहल्ला पहला में है कि -

हक़ पराया नानका उस सूर उस गाय
गुरू पीर हामां भरे जाल मरदाना खाय

अनुवाद :- किसी दूसरे मनुष्य का हक़ (अधिकार) छीनना ऐसा ही है जिस मुसलमान के लिए सुअर खाना और हिन्दू के लिए गाय और गुरू इसका समर्थन नहीं करेगा।

कैसी पवित्र शिक्षा है इन्साफ़ स्थापित करने की और एक-दूसरे के माल को लूटने से रोकने की। यदि समस्त धर्मों के अनुयायी अपने-अपने धर्मों की पवित्र शिक्षाओं की ओर वापस लौट जाएँ तो यही एक अमन का मार्ग है इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं।

रहमत नामः भाई नन्दलाल जी में दर्ज है -

ख़ल्क़ ख़ालिक़ की जान कह
ख़ल्क़ दिखावे नां है
ख़ल्क़ दिखे जब लाल जी
ख़ालिक़ को पै ता है

अनुवाद :- ख़ुदा की सृष्टि को देखकर उसे कष्ट न पहुँचाओ। जो व्यक्ति ख़ुदा की सृष्टि को कष्ट पहुंचाएगा उसे ख़ुदा तआला कभी क्षमा नहीं करेगा।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस विषय को इस रंग में वर्णन किया -

مَنْ لَا يَرْحَمُ النَّاسَ لَا يَرْحَمُ اللّٰهُ

(मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल बाब रहमतुस्सिबयाँ वलअयाल)

कि देखो यदि कोई मनुष्य ख़ुदा के बन्दों पर दया नहीं करता तो अल्लाह उस पर दया नहीं करेगा।

तो इस बात को मस्तिष्क में बैठाना आवश्यक है। इसके बिना वास्तव में न हम धर्म के एक उद्देश्य को पा सकते हैं। न धर्म के दूसरे उद्देश्य को पा सकते हैं। दो ही उद्देश्य हैं धर्म के। मनुष्य को मनुष्य के निकट करना और मनुष्य को ख़ुदा के निकट करना।

एक अवसर पर इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

> "उस व्यक्ति का हमारे साथ कोई संबंध नहीं जो छोटे पर दया नहीं करता और बड़े का सम्मान नहीं करता।"

(तिरमिज़ी किताबुलबिर्र वस्सिल: बाब मा जाआ फ़ी रहमतिस्सिबियान)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि –

> "इस शिक्षा का खुलासा यही है .... किसी धर्म और किसी क़ौम तथा किसी गिरोह के आदमी को बुराई और हानि पहुँचाने का इरादा मत करो (चाहे वह किसी धर्म से संबंध रखता हो) और हर एक के लिए सच्चे नसीहत करने वाले बनो और चाहिए कि फ़साद भड़काने वाले लोगों और दुष्ट तथा बदमाशों और दुष्कर्मियों को हरगिज़ तुम्हारी मज्लिस में गुज़र न हो प्रत्येक बुराई से बचो और प्रयेक भलाई को प्राप्त करने

के लिए प्रयास करो।"

(रूहानी ख़ज़ायन कश्फ़ुल ग़िता, जिल्द-14, पृष्ठ-187,188)

हज़रत गुरू बाबा नानक मेहनत के मुकाम तथा पद को देखें कितने उत्तम रंग में वर्णन करते हैं। कहते हैं –

यदि हाथ से मेहनत करें और ग़रीबों की
सहायता करें तब ख़ुदा का मार्ग मालूम होगा।

(गुरू ग्रन्थ साहिब पृष्ठ-1245)

सिक्ख क़ौम ने इसके एक पहलू पर तो बड़ी ही निष्कपटता के साथ अमल किया है और वह है हाथ से मेहनत करना। मैं बहुत समय तक देश के विभाजन से पहले सिक्खों के साथ रहा हूँ। गवर्नमेण्ट कालेज लाहौर में भी मेरी मित्रता बहुत से सिक्ख विद्यार्थियों से थी। क़ादियान के चारों ओर सब सिक्ख ही फैले हुए थे। मैंने अपने जीवन में कभी सिक्ख भिखारी को नहीं देखा। एक भी सिक्ख कभी नहीं देखा जो दूसरे हिन्दुओं के आगे हाथ फैला कर खड़ा हो कि मुझे भी कुछ खैरात (दान) डाल दो। मालूम होता है कि हज़रत गुरू बाबा नानक की शिक्षा तथा उसी शिक्षा का उन पर इतना गहरा प्रभाव है कि यह क़ौम बहुत मेहनती है और अपने हाथ की पवित्र कमाई खाती है, ग़रीबों की किस सीमा तक मदद करती है। मैं नहीं जानता क्योंकि कठिनाई यह सामने है कि उनमें ग़रीब छुप से गए हैं, क्योंकि स्वाभिमान के कारण तथा अपने हाथ की कमाई खाने की भावना के कारण संभव है कि सिक्ख क़ौम को पता ही न लगता हो कि हमारे अन्दर कितने ग़रीब हैं, ग़रीब हैं भी कि नहीं। इसलिए अल्लाह उत्तम तौर पर जानता है, किन्तु मैंने इस दुनिया में जहाँ सफ़र किए हैं वहां मैंने यह अवश्य देखा कि सिक्ख गुरूद्वारों में दूसरे ग़रीबों के लिए भोजन बांटने का प्रबंध हुआ करता था।

अब मैं कीनिया गया था वहां भी मैंने देखा एक बड़ा गुरूद्वारा था और उस पर यह खुली छुट्टी थी कि निर्धारित समय पर किसी धर्म का आदमी कोई हो काला हो, गोरा हो जब भी वह आएगा उसे इस लंगर खाने से रोटी अवश्य मिलेगी। तो यह पवित्र शिक्षाओं के परिणाम हैं। उनके नेक फल हैं।

हज़रत मसीह अलैहिस्स्लाम ने फ़रमाया –

"वृक्ष अपने फल से पहचाना जाता है।"

तो केवल धार्मिक शिक्षा का प्रश्न नहीं। प्रश्न यह है कि उस शिक्षा को कौन निष्कपटतापूर्वक स्वीकार करता है और उस पर अमल करके दिखाता है उसी को फल लगता है और यदि किसी धर्म के मानने वाले उस धर्म की शिक्षा से मुंह मोड़ लें तो उन्हें कोई फल नहीं लगेगा, वह वृक्ष वीरान हो जाएगा।

मैं आपको नसीहत करता हूँ कि जिस प्रकार आप ने उन शिक्षाओं पर बहुत ही निष्कपटता के साथ अमल किया है और उसका नेक फल खाया है और दुनिया को दिखाया है। इसी प्रकार हज़रत गुरू बाबा नानक की शेष शिक्षाओं को भी सच्चे दिल से स्वीकार करें। इसी में आपका जीवन है और इसी में हिन्दुस्तानी क़ौम की भलाई है। यदि आप गुरू बाबा नानक की शिक्षाओं को अपने अस्तित्त्व में जीवित कर दें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस इलाक़े बल्कि इस इलाक़े से बाहर के इलाकों की भी ज़िन्दगी की उम्मीद बन जाए और इसी में ज़िन्दगी का राज़ है।

पवित्र क़ुर्आन ने भी इस विषय को वर्णन किया। मैं इसलिए बता रहा हूँ कि देखें पवित्र क़ुर्आन ने चौदह सौ साल पहले यह विषय वर्णन किया। परन्तु मुसलमानों ने उस को भुला कर कैसा विनाश का जीवन स्वीकार कर लिया। मैं कराची जाऊं या लाहौर जाऊं या किसी ऐसे

मुसलमान इलाक़े में, देहात में फिरूं जो पाकिस्तान से संबंध रखते हों या हिंदुस्तान में भी मुसलमान भिखारी दिखाई देते हैं। मेरे दिल को बहुत कष्ट पहुँचता है, उनकी सेवा करने की तो अवश्य कोशिश करता हूँ परन्तु मैं कहता हूँ कि देखो कि चौदह सौ वर्ष पूर्व पवित्र क़ुर्आन ने वैध आजीविका की ओर ध्यान दिलाया। हाथ से कमाई हुई रोटी की नसीहत की तथा उसके बावजूद इस क़ौम ने इस शिक्षा से संबंध तोड़ा उनको नेकी का फल नहीं लगा। तो जड़ों से संबंध स्थापित किए बिना किसी वृक्ष को कोई फल नहीं लगा करता। अपनी-अपनी पवित्र शिक्षाओं के साथ गंभीरतापूर्वक निष्कपट हृदय से संबंध जोड़ें तो देखें टहनियां कैसे प्यारे फलों से भर जाएँगी लद जायेंगी और उन मीठे फलों से शेष दुनिया भी लाभ प्राप्त करेगी। पवित्र क़ुर्आन फ़रमाता है –

وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ثُمَّ يُجْزٰ هُ الْجَزَاءَ الْاَوْفٰى (अन्नज्म 40 से 42)

यह कैसा जारी और प्रचलित कानून है जिसमें कोई परिवर्तन नहीं देखोगा कि मनुष्य को वही मिलना चाहिए जो वह अपने हाथ से कमाता है उसी पर उसका अधिकार है जो वह अपनी मेहनत से कमाता है। यह سَعٰى का शब्द केवल मज़दूरी नहीं बल्कि कोशिश अभिप्राय है चाहे मानसिक कोशिश हो या अन्य रंग की कोशिश हो। फ़रमाया मनुष्य को यह राज़ समझ लेना चाहिए कि उसका वही है जो वह स्वयं अपनी कोशिश से कमाता है और ख़ुदा यह वादा करता है कि यदि तुम कोशिश करोगे तो अवश्य उसका प्रतिफल देगा।

ثُمَّ يُجْزٰ هُ الْجَزَاءَ الْاَوْفٰى

फिर प्रतिफल देने के बाद उसे और भी अधिक प्रतिफल देगा। भर-भर के प्रतिफल देगा।

अत: क़ौमों के जीवन का राज़ मेहनत में है निष्कपटता के साथ सच्ची आजीविका की तलाश में है। मुसलमानों में कैसी प्यारी शिक्षा मौजूद थी, परन्तु अफ़सोस कि उसकी ओर ध्यान न देने के कारण कहाँ से कहाँ पहुँच गए।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जहाँ दान-पुण्य करने की शिक्षा दी वहां यह भी वर्णन किया कि

اَلْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلٰى

कि याद रखो ऊपर का हाथ बहरहाल उत्तम है नीचे के हाथ से। और इस शिक्षा पर इतना ज़ोर दिया कि एक बार एक सहाबी किसी गली से गुज़र रहे थे कि उनके हाथ से कूड़ा गिर गया और एक बच्चे ने दौड़ कर उठाने का प्रयास किया। इस से पहले कि वह लपक के नीचे उतरे उसे उठा लिया तो बच्चे ने कहा - आप ने क्यों कष्ट किया मै जो आ रहा था। आप ने फ़रमाया मेरे आक़ा-व-मौला ने मुझे यही नसीहत की है कि अपने काम अपने हाथ से करो। इसलिए मैं यह भी पसन्द नहीं करता कि तुम मुझ से पहले पहुँच कर मेरे कहने के बिना ही मुझे वह पकड़ा दो।

यह वह शिक्षा है जो मनुष्यों के जीवन में इन्क़िलाब ला सकती है। इस बारे में कुछ लोग ग़लत ज्ञान और ग़लत सूफ़ीइज़्म के परिणामस्वरूप समझते हैं कि दुनिया से संबंध-विच्छेद कर लेना और लोगों को आजीविका पर पड़े रहना यही ख़ुदादारी है। ऐसी बात हरगिज़ नहीं। एक मुसलमान वलीउल्लाह की घटना मैं आप को सुनाता हूँ -

एक बार उन्होंने अपने बेटे को व्यापार के लिए भिजवाया और व्यापार का बहुत सा सामान साथ दिया। उस काफ़िले ने जंगल में पड़ाव किया और पड़ाव के दौरान जब रात हो गई तो उस लड़के ने एक अद्भुत

दृश्य देखा कि एक शेर आया है। उसने एक जानवर का शिकार किया, एक झाड़ी के अन्दर घसीट कर ले गया और जितना खा सकता था खा लिया और शेष छोड़ कर चला गया। उसके पीछे एक लगड़बग्गा जिसकी पिछली टांगें मारी हुई थीं। वह घसिटता-घसिटता पहुंचा और शेर के शेष छोड़े हुए जानवर में से उसने अपना पेट भी भर लिया। जब उसने यह दृश्य देखा तो उसने अपना सामान सब काफ़िले वालों को देकर खाली हाथ लौट गया। जब बाप ने पूछा कि बताओ क्यों वापस आए? तो उसने कहा - ख़ुदा अन्नदाता है, मैंने उस का दृश्य अपनी आँखों के सामने देख लिया है। हर मख़्लूक़ का वह ज़िम्मेदार है तो फिर मुझे क्या आवश्यकता है कि दुनिया के धन्धों में पडूं। उस बुज़ुर्ग ने उत्तर दिया - यह राज़ मुझे भी मालूम था परन्तु मैं यह चाहता था कि तुम वह शेर बनो जिसका खाया हुआ लगड़बग्गे खाया करें। वह लगड़बग्गे न बनो जो शेर के खाए हुए की प्रतीक्षा में पड़ा रहे।

यह है सुन्दर शिक्षा का संतुलन। ख़ुदा की कृपा से सिक्ख क़ौम ने इस को समझा है और अल्लाह की कृपा से जमाअत अहमदिया भी इस इस्लामी शिक्षा पर बहुत ही निष्कपटता के साथ स्थापित और पाबन्द है। यहाँ तक कि हम असीम प्रयास करते हैं कि अपने ग़रीब के दिल का प्रश्न उठने से पहले उस तक पहुंचें और जहाँ तक व्यक्तिगत तौर पर दान देने का संबंध है उस से बहुत अधिक जमाअत अपनी ओर से आवश्यकताएं पूरी करती है तथा प्रत्येक ग़रीब को अपने पैरों पर खड़ा करने का प्रयास करती है ताकि केवल नीची नज़रों के साथ दान (ख़ैरात) लेने वाले पैदा न हों बल्कि ऐसे पैदा हों जो स्वयं अपने पैरों पर खड़े हो जाएँ और अन्य ग़रीबों की सेवा करने की योग्यता प्राप्त कर लें। तो अल्हम्दुलिल्लाह कि जमाअत अहमदिया इस सन्दर्भ में विश्वव्यापी प्रयास

कर रही है और आज मैं इस जल्से में यह घोषणा करता हूँ कि जमाअत अहमदिया हिन्दुस्तान के ग़रीब क्षेत्रों के लिए मैंने एक स्कीम सोची है उसके अन्तर्गत इन्शा अल्लाह वहां उद्योग के कार्य जारी किए जाएंगे। ऐसे उद्योग जारी किए जाएंगे, ऐसे व्यापार उनको सिखाये जाएंगे जिसके नतीजे में ग़रीब अहमदी पूरी तरह अपने पैरों पर खड़े होकर जोश और उमंग के साथ मानवजाति की सेवा कर सकेंगे।

जमाअत अहमदिया ने एक अन्य गुर पवित्र क़ुर्आन से यह सीखा है कि ग़रीबों में भी क़ुर्बानी करती है और ग़रीब होकर मुहताज होने के बावजूद अन्य मुहताजों के लिए जो कुछ उनके पास है वह प्रस्तुत करती चली जाती है। यह वह अद्भुत दृश्य है जो ऊपर की मंज़िल का दृश्य है। ख़ुदा की ओर सफ़र एक स्थान पर ठहरने का सफ़र नहीं बल्कि एक शिक्षा को प्राप्त करने के पश्चात् उस से आगे एक ऊपर की मंज़िल भी निर्माण हुआ करती है। तो अल्लाह तआला की कृपा और उपकार के साथ जमाअत अहमदिया उन ऊपरी मंज़िलों की ओर गतिशील है और यह चाहती है कि समस्त मानवजाति इन अच्छी बातों में उनके साथ होती चली जाए।

हज़रत गुरू नानक साहिब फ़रमाते हैं कि -

> दुनिया में दूसरों की सेवा करनी चाहिए। सेवा करने वाला ही अल्लाह तआला के दरबार में उपस्थित हो सकेगा और अपने पूरे तन, मन, धन के साथ लोगों की सेवा करनी चाहिए।"

(सीरी राग मोहल्ला पहला पृष्ठ-25,26)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जहाँ आत्म सम्मान पैदा किया वहां सेवा पर, और मुहताज की आवश्यकता पूरी करने पर

इतना बल दिया है कि जहाँ तक मैंने धर्मों का अध्ययन किया है मुझे किसी अन्य धर्म में इतनी सख़्ती के साथ तथा इतनी प्रचुरता के साथ मानवजाति की सेवा पर बल देने का वर्णन नहीं मिलता। यह मैं तुलना के तौर पर नहीं कह रहा बल्कि एक सच्ची वास्तविकता है जिसे आप के सामने रख रहा हूँ। जिस को भी मानवजाति की सेवा की रुचि हो उसे अपने धर्म के अतिरिक्त पवित्र क़ुर्आन और हदीसों का भी अध्ययन करना चाहिए। उसे वहां अपना मनपसन्द बहुत सा ख़ज़ाना मिलेगा। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा और बन्दे के संबंध को बहुत ही प्यारे उदाहरणों के साथ हमारे सामने रखा। एक अवसर पर आप ने फ़रमाया कि - क़यामत के दिन ख़ुदा अपने एक बन्दे से नाराज़गी अभिव्यक्त करेगा। कहेगा मैं तुझे पसन्द नहीं करता। उसने कहा - क्यों? ख़ुदा उत्तर देगा कि मैं भूखा था मैं तेरे पास आया तूने मुझे खाना नहीं खिलाया मैं प्यासा था तूने मुझे पानी नहीं पिलाया, मेरे शरीर के कपड़े फटे हुए थे तूने मुझे कुछ पहनाया नहीं, मैं छत के बिना तूने मेरे रहने के लिए कोई प्रबंध नहीं किया।

वह बन्दा ख़ुदा से कहेगा - हे समस्त लोकों के रब्ब! तुझे क्या आवश्यकता थी, तू तो सब दुनिया का दाता है, सब को खिलाता है, सब को पिलाता है, सब को पहनाता है, सब को अमन की जगहें प्रदान करता है। तू कैसी बात कर रहा है। तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा - देखो! जब मेरा ग़रीब बन्दा भूखा था तो मैं भूखा था तूने अपना पेट भरा और ग़रीब के खाली पेट की परवाह नहीं की तो जैसे मेरी परवाह नहीं की। जब मेरा ग़रीब बन्दा नंगे शरीर था तूने उसे ढांपने की कोशिश नहीं की। जब मेरा ग़रीब बन्दा प्यासा था तो तूने उसकी प्यास नहीं बुझाई तो मेरी प्यास नहीं बुझाई। जब वह बेघर था तूने कोशिश नहीं की कि उसे सिर

छुपाने की जगह मिले तो मेरे लिए कोशिश नहीं की।

तो ख़ुदा का अपने ग़रीब बन्दों से यह संबंध है, यह शिक्षा है इस्लाम की और इस शिक्षा की दृष्टि से जो ख़ुदा के ग़रीब बन्दों से संबंध काटता है तो अल्लाह तआला उस से संबंध काट लेता है।

अतः इस विषय का प्रथम भाग यह था कि जो ख़ुदा के बन्दों को कष्ट पहुंचाते हैं, उनको दुःख पहुंचाते हैं वह ख़ुदा के हरगिज़ नहीं हो सकते।

द्वितीय भाग यह है कि जो ख़ुदा के बन्दों की सेवा पर नहीं लगे रहते वे ख़ुदा का प्रेम हरगिज़ प्राप्त नहीं कर सकते।

हिन्दू धर्म में भी इस विषय पर इसी प्रकार की शिक्षा है। केवल दो चार नमूने आपके समक्ष रख सकूँगा।

भगवत गीता से यह हवाला है :-

> हे अर्जुन! जो मनुष्य सम्पूर्ण सृष्टि लोक को बिना भेदभाव के एक समान समझता है तथा उनका सुख अपने सुख जैसा और उनका दुःख अपने दुःख जैसा महसूस करता है वह मनुष्य सब से उच्च आरिफ़ गिना जाता है।

(भगवत गीता अध्याय-6 श्लोक-34)

फिर भगवत गीता अध्याय-12 श्लोक-13 में दर्ज है :-

> "जो मनुष्य किसी से ईर्ष्या और दुश्मनी नहीं रखता, मित्रता वाला है। जो ख़ुशी-व-ग़म, दुःख-व-सुख एक समान समझता है, जो समस्त सृष्टि से हमदर्दी और प्रेम रखता है, सब पर दया करता है, अभिमान और अहंकार से ऊपर है, क्षमाशील, सदैव

आशुतोषर, धैर्यवान, कृतज्ञ, प्रवृत्ति पर नियन्त्रण रखने वाला, जो सदैव दिल एवं मस्तिष्क से मुझ ईश्वर में लगा रहता है वही भक्त मुझे प्यारा है।"

हज़रत जाबिर[रज़ि॰] रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया -

"क़यामत के दिन तुम में से मुझे सर्वाधिक प्रिय और सर्वाधिक निकट वे लोग होंगे जो सबसे अधिक अच्छे शिष्टाचार वाले हैं और सब से अधिक शत्रु समझे जाने वाले वे लोग होंगे जो मुंहफट बढ़-बढ़ कर बातें करने वाले तथा लोगों में अहंकार के साथ फिरते हैं।"

इस विषय की बहुत प्रिय शिक्षाएं हमें भगवत गीता में भी मिलती हैं और इसी प्रकार वेदों में भी बहुत ही पवित्र शिक्षाओं के नमूने दिखाई देते हैं। उन सब नमूनों को पढ़कर मनुष्य का दिल इस विश्वास से भर जाता है कि हमारा एक ही ख़ुदा है और हर धर्म के प्रारंभ से बुज़ुर्ग मनुष्यों पर वही एक ख़ुदा प्रकट हुआ और उस ख़ुदा से यदि प्रेम रखते हैं तो हमें एक-दूसरे से अपने प्रेम के संबंधों को बढ़ाना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत गुरू बाबा नानक के बारे में फ़रमाते हैं :-

"इस बात में कुछ सन्देह नहीं हो सकता कि (हज़रत) बाबा नानक एक नेक और चुना हुआ मनुष्य था और उन लोगों में से था जिन को महाप्रतापी ख़ुदा अपने प्रेम का शर्बत पिलाता है।"

(रूहानी ख़ज़ायन पैग़ाम-ए-सुलह जिल्द-23, पृष्ठ-445)

आप फ़रमाते हैं :-

"जो दूर इससे, उससे ख़ुदा दूर है।"

(रूहानी ख़ज़ायन सतबचन जिल्द-10, पृष्ठ-161)

गुरू बाबा नानक के चोले पर जो पंक्तियां लिखी हुई हैं जिस ख़ुदा के नूर का वर्णन वह हमें बताता है कि इस बुज़ुर्ग से बल्कि उस के कपड़ों से भी जो दूर है ख़ुदा उस से दूर हो जाता है।

फिर फ़रमाते हैं -

"यदि उसके अस्तित्त्व (अर्थात् हज़रत गुरू बाबा नानक के अस्तित्त्व) और उसकी पवित्र शिक्षाओं से कुछ लाभ उठाया जाता तो आज हिन्दू और मुसलमान सब एक होते। हाय अफ़सोस हमें इस कल्पना से रोना आता है कि ऐसा नेक आदमी दुनिया में आया और गुज़र भी गया परन्तु नासमझ लोगों ने उसके नूर से कुछ प्रकाश प्राप्त न किया।"

(रूहानी ख़ज़ायन पैग़ाम-ए-सुलह जिल्द-23, पृष्ठ-446)

यही पाक चोला है सिक्खों का आज
यही काबली मल के घर में है आज
यही है कि नूरों से मा'मूर है
जो दूर इससे उससे ख़ुदा दूर है
यही जनम साखी में मज़्कूर है
जो अंगद से इस वक्त मशहूर है
इसी पर वे आयात हैं बय्यिनात
कि जिनसे मिले जाविदानी हयात
यह नानक को खिलअत मिला सरफ़राज़

ख़ुदा से जो था दर्द का चारा साज़
उसी से वह सब राज़ हक़ पा गया
उसी से वह हक़ की तरफ़ आ गया

(रूहानी ख़ज़ायन सतबचन जिल्द-10, पृष्ठ-161)

हज़रत कृष्ण जी के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लिखते हैं :-

"एक बार हमने कृष्ण जी को देखा वह काले रंग के थे और पतली नाक और चौड़े मस्तक वाले हैं। कृष्ण जी ने उठकर अपनी नाक हमारी नाक से और अपना मस्तक हमारे मस्तक से मिलाकर चिपका दिया।"

(अल-हकम जिल्द-12 6से 17 मार्च 1908 ई तज़्किरा पृष्ठ-381 प्रकाशन 1969 ई, रब्वा)

इस निबंध में आज आपके लिए यह बात बड़ी आश्चर्यजनक है कि एक व्यक्ति जब गले मिलता है तो नाक से नाक, मस्तक से मस्तक क्यों मिलाए। मुझ पर भी यह राज़ न खुलता यदि मैं न्यूज़ीलैण्ड न गया होता वहां एक प्राचीन जाति आबाद है जो ज्ञात मानव सभ्यता से भी बहुत पहले से वहां आबाद है और अपनी प्राचीन रिवायतों को जीवित रखे हुए हैं। तो उनके लीडर ने अपने प्रेम और अपनाइयत कि अभिव्यक्ति के तौर पर मेरे गले लगकर मेरी नाक से नाक मिला दी और माथे से माथा मिला दिया। तब इस के नतीजे में मुझ पर दो बातें स्पष्ट हुईं। प्रकट तो एक ही हुई परन्तु इसके नतीजे में एक अन्य लाभ भी प्राप्त हुआ। स्पष्ट यह हुआ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जो कश्फ़ में हज़रत कृष्ण दिखाई देते हैं तो निस्सन्देह उस युग में यही रिवाज होता होगा जैसा कि

प्राचीन काल की जातियों की सभ्यता से एक दृश्य स्वयं मैंने देख लिया और दूसरे यह राज़ ज्ञात हो गया कि इन स्थानों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई के मामले में बहुत शक्तिशाली गवाहियाँ हैं। अन्यथा एक सामान्य मनुष्य जो अपने नफ़्स से कोई चीज़ बनाता है। हिन्दुस्तान की सभ्यता में पोषण हुआ हो तो यह बात सोच भी नहीं सकता कि कश्फ़ में किसी बुज़ुर्ग को देखे और बजाए इसके कि गले मिले या चरणों में हाथ लगाने दे या स्वयं लगाए, वह नाक से नाक मिलाए और माथे से माथा तो वास्तव में यह एक मात्र एवं अद्वितीय ख़ुदा जो अन्तर्यामी है उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर प्रकट किया कि जिस युग में हज़रत कृष्ण हुआ करते थे उस युग में क़ौमों में प्रेम और एकता की अभिव्यक्ति की यही पद्धति प्रचलित थी।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं -

> "राजा कृष्ण जैसा कि मुझ पर प्रकट किया गया है वास्तव में एक ऐसा पूर्ण मनुष्य था जिसका उदाहरण हिन्दुस्तान के किसी ऋषि और अवतार में नहीं पाया जाता था अपने समय का अवतार अर्थात् नबी था, जिस पर ख़ुदा की ओर से रूहुल क़ुदुस उतरता थी। वह ख़ुदा की ओर से विजयी और सौभाग्यशाली था जिसने आर्यावर्त की पृथ्वी को पाप से पाक साफ़ किया। वह अपने समय का वास्तव में नबी था जिसकी शिक्षा को पीछे से बहुत बातों में बिगाड़ दिया गया। वह ख़ुदा के प्रेम से भरपूर था नेकी से मित्रता तथा बुराई से शत्रुता रखता था।"

(रूहानी ख़ज़ायन लैक्चर सियालकोट, जिल्द-20, पृष्ठ-228,229)

हज़रत अक़्दस मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी हज़रत कृष्ण की चर्चा की है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसका हवाला देते हुए लिखते हैं :-

> "एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दूसरे देशों के अंबिया के संबंध में प्रश्न किया गया तो आपने यही फ़रमाया कि प्रत्येक देश में ख़ुदा तआला के नबी गुज़रे हैं।

और फ़रमाया कि प्रत्येक देश में ख़ुदा तआला के नबी गुज़रे हैं और फ़रमाया कि -

كَانَ فِي الْهِنْدِ نَبِيًّا أَسْوَدُ اللَّوْنِ اِسْمُهُ كَاهِنًا

अर्थात् हिन्द में एक नबी गुज़रा है जो काले रंग का था और उसका नाम काहिन था अर्थात् कन्हैया जिसको कृष्ण कहते हैं।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को कलियुग का अवतार ख़ुदा ने बनाया और आप पर यह नई वह्यी उतारी -

"हे रुद्रगोपाल तेरी स्तुति गीता में लिखी है।"

(रूहानी ख़ज़ायन तुहफ़ा गोलड़विया, तज़्किरः पृष्ठ-384)

और एक अन्य स्थान पर यही इल्हाम इन शब्दों में हुआ कि :-

"हे कृष्ण रुद्रगोपाल तेरी महिमा गीता में लिखी गई है।"

(रूहानी ख़ज़ायन लैक्चर सियालकोट, जिल्द-20, पृष्ठ तज़्किरः पृष्ठ 1330 संस्करण 1969 रब्वाह से प्रकाशित)

अब मैं इस निबंध को समापन की ओर ले जा कर अन्तिम कुछ बातें आप के सामने रखता हूँ। इन समस्त हवालों का उद्देश्य केवल एक है कि हिन्दुस्तान के देश को मैं कई प्रकार की समानता का लक्ष्य-स्थल बनता हुआ देख रहा हूँ। यह मेरी पहली मातृभूमि है। यहीं मैं पैदा हुआ,

यहीं मैंने आँखें खोलीं इस ज़मीन की मिट्टी से मेरा अस्तित्त्व बनाया गया और चाहे किसी कारण से भी मुझे यहाँ से प्रवास करना पड़ा परन्तु मेरा गहरा प्रेम इस सम्पूर्ण देश से है और फिर क़ादियान की बस्ती से हर अहमदी को एक अनश्वर प्रेम है जो क़यामत तक जारी रहेगा। इस रिश्ते से भी मुझे इस देश से प्यार है जिस देश में क़ादियान की पवित्र बस्ती आबाद है। आपके धर्म ने भी मुझे यही शिक्षा दी, आप के धर्म ने भी आपको यही शिक्षा दी, एक-दूसरे से प्रेम और मुहब्बत को बढ़ाओ और जब भी मैं विश्व में बैचैनी के लक्षण पाता हूँ मेरे हृदय को बहुत कष्ट पहुँचता है। परन्तु विशेष तौर पर जब मैं हिन्दुस्तान में बेचैनी देखता हूँ या पाकिस्तान में बेचैनी देखता हूँ, जब यहाँ मनुष्यों को एक-दूसरे से लड़ते हुए देखता हूँ या देशों को देशों से नफ़रत करते हुए और दूर हटते हुए देखता हूँ तो मेरा दिल कहता है और मैं बहुत अधिक कष्ट महसूस करता हूँ तथा भविष्य के बारे में ऐसे ख़तरे देखता हूँ जिनका ज्ञान यदि आपको हो जाए तो आप के पित्ते पानी हो जाएँ। बहुत ही भयानक दिन हमारे सामने आने वाले हैं। इसलिए मैं आपकी महान किताबों के हवाले से आप को नसीहत करता हूँ और अपनी महान किताब के हवाले से अहमदियों को तथा समस्त मुसलमानों को नसीहत करता हूँ कि समय है की शीघ्र एक-दूसरे से प्रेम का संबंध जोड़ लो और नफ़रतों को सदैव के लिए अलविदा कह लो अन्यथा इस दुनिया में तुम जीवन के फैशन से दूर जा पड़ोगे। ऐसे इन्क़िलाब खड़े हो चुके हैं जिनका मैंने प्रारंभ में वर्णन किया था। जिनके परिणाम स्वरूप पश्चिमी शक्तियाँ एक नई शान के साथ तथा नए विश्वास के साथ और ऐसे संकल्प के साथ दुनिया पर क़ब्ज़ा करने वाली हैं कि जिसके बाद कमज़ोर देशों की कल्पना में भी नहीं आ सकता कि वे इन से किस प्रकार छुटकारा प्राप्त करें। यह

शक्तियाँ यद्यपि जन सामान्य के स्वभाव की पूर्ण रूप से द्योतक हों या न हों परन्तु पश्चिमी राजनीति एक राजनीति की हैसियत से इस प्रकार उभर रही है और उन्हीं मार्गों पर चल पड़ी है। क्योंकि दुर्भाग्य से इस राजनीति की बागडोर आज अमरीका के हाथ में है और अमरीका अहंकार की चरम सीमा तक जा पहुंचा है जिसके बाद फिर पतन का आरंभ शुरू हो जाया करता है। परन्तु इस से पूर्व कि वे महान परिवर्तन दुनिया में प्रकट हों हमें बहुत सी कठिनाइयों से गुज़रना है। यदि हम ने अपने देशों में अमन स्थापित न किया, यदि ग़रीब क़ौमों ने ग़रीब क़ौमों से मिल-बैठकर अपने जीवित रहने के सामान न किए तो दिन-प्रतिदिन हम कमज़ोर और दुर्दशाग्रस्त होते चले जाएंगे और इसके परिणाम स्वरूप प्रत्यक्ष तौर पर हमेशा के लिए दासता की ज़ंजीरों में जकड़े जाएंगे जिनसे कोई छुटकारा प्राप्त नहीं हो सकता सिवाए इसके कि अल्लाह तआला का प्रारब्ध उस विश्वव्यापी युद्ध को आरंभ कर दे जिस से बज़ाहिर दुनिया पीछे हट चुकी है। परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि पीछे कदापि नहीं हटी बल्कि उस इन्क़िलाब के बाद जो रूस में हुआ और उस इन्क़िलाब (क्रान्ति) के बाद जिसमें बर्लिन की दीवार टूटी दुनिया युद्ध के अधिक निकट हो चुकी है और भविष्य के लिए दुनिया के अमन को बहुत अधिक ख़तरे लगे हैं। उसी क़ादियान से जिस से पहले ख़ुदा तआला के चुने हुए लोगों ने दुनिया को चेतावनी दी उसी चेतावनी को आज मैं आपके सामने दोहराता हूँ जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चेतावनी है। अपना सुधार कर लो, अपने नफ़्स को पवित्र कर लो। ख़ुदा के लिए अपने नफ़्स को मिटाओ और मानवजाति से प्रेम करने की शिक्षा दो। एक-दूसरे के साथ प्रेम से रहना सीखो अन्यथा तुम्हारे सम्माननीय जीवन की कोई गारंटी नहीं दी जा सकती।

अब आप देखिए कि हम ग़रीब देशों के बजट प्रायः अपनी प्रतिरक्षा के लिए खर्च हो रहे हैं। प्रतिरक्षा किस के विरुद्ध, एक अन्य ग़रीब देश के विरुद्ध और वह ग़रीब देश अपने बजट का अधिकाँश भाग अपनी प्रतिरक्षा के लिए तैयार कर रहा है और ख़तरा एक को दूसरे से है। इस बेचैनी की अवस्था में आप की जनता कैसे जीवन के दिन गुज़ार सकती है। जिस देश की बहुत बड़ी पूँजी एक-दूसरे का ख़ून चूसने के लिए हथियार खरीदने में खर्च हो जाए उसकी ग़रीब जनता को कौन ख़ून देगा। तो जब युद्ध होंगे तो ग़रीब का ख़ून ही है जो दोबारा युद्धों में झोंका जाएगा। यह सीधी सी बात है, यह खुला-खुला मामला है। इसे क्यों आज क़ौमें नहीं समझतीं, इसे क्यों क़ौम के लीडर नहीं देखते।

मैं आप को नसीहत करता हूँ यदि ऐसा न किया तो बहुत ही गन्दे और भयावह दिन आने वाले हैं इसके विवरणों में जाने का समय नहीं। पहले ही बहुत अधिक देर हो चुकी है।

मैंने जो अपनी नज़्म के अन्तिम शे'र से पहले एक मिस्रा (आधार शे'र) कहा था वह हम दोनों क़ौमों को इकठ्ठा कर ले और एक ही ख़ुदा की ओर झुकाने के लिए उत्तम नारा है - "वाहि गुरू, अल्लाहु अकबर", ख़ुदा करे कि ये नारे नारे न रहें बल्कि वास्तव में हमारे दिल एक ही ख़ुदा के प्रेम में हमेशा के लिए बांधे जाएँ। अब मैं आप से इजाज़त लूँगा समय अधिक हो चुका है। जाने से पहले कुछ बातें आप के सामने दुआ की प्रेरणा के तौर पर रखना चाहता हूँ।

जमाअत अहमदिया दुनिया के किसी भी भाग में रहती हो उसे क़ादियान से एक गहरा प्रेम है और विशेष तौर पर पाकिस्तान के रहने वालों ने एक लम्बे समय से दिल में यह विचार जमा लिया था कि शायद हमारा आक़ा और क़ादियान का दर्शन करना हिन्दुस्तान की सरकार या

क़ादियान निवासियों को पसन्द न हो। और यही एक असर था जिसके नतीजे में या शायद किसी अन्य कारण से जमाअत के किसी ख़लीफ़ा को देश-विभाजन के पश्चात् यहाँ आने की सामर्थ्य प्राप्त नहीं हुई। मैंने जो आने का फैसला किया तो बहुत दुआएं कीं बहुत इस्तिख़ारे करवाए तथा इस कसरत से सम्पूर्ण संसार से ख़ुदा की उँगली इस ओर इशारा करती हुई दिखाई दी कि तुम्हारा क़ादियान जाना ख़ुदा की इच्छा और मर्ज़ी के अनुसार होगा और इसमें भलाई एवं बरकत है तथा सम्पूर्ण विश्व की भलाई इसी में है। इसके नतीजे में पवित्र इन्क़िलाब प्रकट होंगे।

वे स्वप्न जिनको मैंने एक अलग फ़ाइल में सुरक्षित रखवाया है उनको आप पढ़ें तो हैरान रह जाएंगे कि किस प्रकार ख़ुदा तआला ने दुनिया के विभिन्न देशों में अहमदियों को इस मुबारक सफ़र के बारे में विश्वास दिलाया और बताया कि यह ख़ुदा की इच्छा के अनुकूल है तथा बरकत का कारण होगा तथा कुछ ख़बरें मुझे इत्मीनान दिलाने के लिए ऐसी विस्तार से दीं कि मेरा दिल गद-गद हो उठा और रूह सज्दे में गिर गई। कभी बहुत छोटी सी बात होती है परन्तु उस से मनुष्य को यह पूर्ण विश्वास हो जाता है कि अल्लाह तआला बड़े प्यार के साथ और बारीक नज़र से हमें देख रहा है और विश्वास दिलाना चाहता है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, आगे बढ़ो जो फ़ैज़ तुम्हारे लिए प्रारब्ध हैं उन्हें पा लो।

एक बार लन्दन में बैठे हम बातें कर रहे थे कि बच्चे वहां किस प्रकार जाएंगे तो मेरे एक नवासे ने एक फ़ौजी सूट पहना हुआ था और छोटा सा नवासा है उसका दिल बहुत चाह रहा था कि मैं फ़ौजी सूट में हिन्दुस्तान जाऊं और उसकी माँ कहती थी कि यह पाकिस्तानी फ़ौजी सूट है पता नहीं वे क्या समझेंगे किस नीयत से आया है। मैंने कहा दो ढाई साल का बच्चा है वे लोग क्या समझेंगे अच्छे समझदार लोग हैं।

शौक़ पूरा करने दो। उनका जो मतभेद बढ़ा तो मैंने यह फैसला किया कि मुझे तो अहमदी लड़कों का फ़ौजी सूट में रहना अधिक पसन्द है। अर्थात् क़ादियान जाने के लिए फ़ौजी सूट अधिक पसन्द है आम कपड़ों की अपेक्षा। जब मैं नीचे दफ़्तर गया तो आगे डाक में यह पत्र पड़ा हुआ था कि मैंने इस्तिख़ारा किया तो मुझे ख़ुदा तआला ने यह दृश्य दिखाया है कि हिन्दुस्तान जल्से पर जाते हुए आप को लड़कियों के लिए तो सामान्य कपड़े पसन्द और बच्चों के लिए फ़ौजी सूट पसन्द हैं। अब बताइए वह कौन सी शक्ति थी जिसने दूर बैठे हुए दूसरे देश के एक अहमदी को यह दृश्य दिखाया और टाइमिंग ऐसी Perfect थी कि ऊपर मैं वार्तालाप कर के नीचे उतर रहा हूँ और जाकर सामने वह पत्र पड़ा है जिसमें वे बातें लिखी हैं जो हमारे बीच हो रही थीं और इस प्रकार ख़ुदा ने बहुत बारीक एवं उत्तम शैली में मेरा हौसला बढ़ाया तथा विश्वास दिलाया कि ख़ुदा की तक़्दीर है जो तुम्हें वहाँ ले जा रही है।

अब एक अन्य घटना सुन लीजिए। वहां हमारे एक मित्र उस्मान चीनी साहिब हैं जिन्होंने चीनी भाषा में पवित्र क़ुर्आन का अनुवाद किया है। मेरे बचपन के सहपाठी भी हैं बहुत पवित्र दुआ करने वाले मनुष्य हैं। मैंने उन को भी इस्तिख़ारा के लिए लिखा। उनका विचित्र उत्तर आया। उन्होंने कहा कि मैंने स्वप्न में देखा है कि आप के साथ आपके घर के बारह या चौदह वे लगभग इतने लोग हैं और यह विचार हो रहा है कि जिस मकान में मुझे ठहराया जाता है वहां से दो मकान खाली करवाएं जाएँ तो मैं यह कहता हूँ कि चूँकि खानदान के सदस्य अधिक हैं इसलिए दो मकान का खाली होना ही अच्छा है। उनका यह स्वप्न मुझे पहुंचा। इधर क़ादियान से यह सूचना मिली कि आप के मकान में अर्थात् उम्मे ताहिर के मकान में जिसमें आपका ठहरना अभीष्ट है वहां दो दरवेश खानदान

ठहरे हुए हैं। हमने फ़ैसला किया है कि उनको वहां से किसी और स्थान पर स्थानान्तरित कर दें ताकि आप के लिए पूरी सुविधा उपलब्ध हो जाए। मैंने उनको लिखा और यह लिखने के बाद स्वप्न वाला पत्र मुझे मिला है। मैं उन्हें उत्तर लिख रहा था कि मुझे पसन्द नहीं कि आप इस प्रकार दरवेशों को कष्ट दें। जब तक आप यह विश्वास नहीं दिलाएंगे कि वे पूरी खुले दिल के साथ बिना थोड़ी सी दुविधा के वे स्वयं घर खाली करना चाहते हैं उस समय तक उनको वहां से न हटाया जाए। यह पत्र जब मैं लिखवा चुका तो उसके बाद उस्मान चीनी साहिब का वह पत्र मेरे सामने था। उस से मुझे यह विश्वास तो हो गया कि ख़ुदा की तक़्दीर मुझे बता रही है कि तुम्हारे फैसले भी ठीक हैं परन्तु होगा वही जो मैं चाहता हूँ। अतः उनकी ओर से Fax आया कि वे दोनों दरवेश बड़े प्रेम और जोश के साथ कहते हैं कि हमें हरगिज़ कोई कष्ट नहीं दूसरा घर शायद अधिक अच्छा हमारे लिए। इसलिए हमें स्थानान्तरित कर दें। जहाँ तक बारह और चौदह का संबंध है मेरे बच्चे और उनके बच्चे मिला कर बारह मेरे साथ आए हैं और जमाअत के प्रतिनिधित्व में मैं और मेरी पत्नी जो चौदह बनते हैं। चूँकि यह विभाजन मैंने किया था कि जमाअत के प्रतिनिधि बन कर केवल हम दो जाएंगे और शेष व्यक्तिगत तौर पर मैं साथ ले जाऊंगा। इसलिए अल्लाह तआला ने भी स्वप्न में उनको इसी विभाजन के साथ दृश्य दिखाया कि बारह या चौदह के लगभग लोग हैं और उनके लिए अपेक्षाकृत खुले स्थान की आवश्यकता है। तो देखिये अब बताइए यदि ख़ुदा से संबंध नहीं और ख़ुदा हम पर प्यार की नज़र नहीं रखता तो इतने बारीक विवरण के साथ हमारे मामलों में क्यों दिलचस्पी ले रहा है और क्यों समय से पूर्व हमें भविष्य में होने वाली ख़बरों की सूचना देता है।

मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूँ कि ख़ुदा के संबंध के ये सिलसिले इसी क़ादियान की बस्ती से आज से लगभग सौ साल पहले आरंभ हुए थे। यही वह बस्ती है जिसके हम सदैव कृतज्ञ रहेंगे, क्योंकि इस बस्ती के मार्ग से हमें मक्का और मदीना से मिलाया गया और इसी बस्ती के मार्ग से हमें चौदह सौ वर्ष के फ़ासले पाट दिए और आख़िरीन (बाद में आने वाले) होते हुए भी पहलों से जा मिले।

इसलिए इस बस्ती का उपकार हमेशा के लिए हम पर रहेगा। किन्तु उपकार का प्रश्न नहीं हम तो उसके प्रेम में गिरफ़्तार हो चुके हैं और दुनिया में जहाँ भी हों हर अहमदी के दिल में स्वाभाविक तौर पर क़ादियान के लिए असीम प्रेम और जोश पाया जाता है।

जब मैं यहाँ आ रहा था मेरा भी यही हाल था, मेरे बच्चों का भी यही कि हमें यों लगता था कि स्वप्न देख रहे हैं, नहीं जानते थे कि स्वप्नों की कोई ताबीर (स्वप्नफल) निकलेगी या नहीं। अभी परिस्थितियां अविश्वसनीय थीं परन्तु एक स्वप्नों की सी हालत में हमने समय व्यतीत किया। जब यहाँ पहुंचे तो यों लगा कि स्वप्न की ताबीर भी एक स्वप्न जैसी है और जितना समय मैंने यहाँ गुज़ारा है तथा मैंने अपने कुछ साथियों से पूछा तो उनकी भी यही हालत थी कि स्वप्नों की ताबीर की बजाए सामने भी स्वप्न ही मिले कि जितना समय गुज़ारा एक स्वप्न की सी हालत में गुज़ारा है अब वे दिन क़रीब आ रहे हैं कि वे स्वप्न भी स्वप्न बनने वाले हैं। जब मैं जुदा होने की कल्पना करता हूँ तो मेरा दिल शोक से पिघल जाता है। यह बस्ती मुझे इतनी प्रिय है, इतनी प्रिय है, इतनी प्रिय है कि जी चाहता है कि सम्पूर्ण जीवन इसी मिट्टी में फिरते हुए, इन्हीं हवाओं में सांस लेते हुए, इन्हीं गली-कूचों में क़दम चलाते हुए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के प्यारों की याद में अपना जीवन यहाँ

गुज़ारूँ और यही हालत आप सब की है परन्तु अन्ततः हमें जुदा होना है परन्तु यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि क़ादियान का यह सफ़र पहला तो है परन्तु अन्तिम नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने बड़े स्पष्ट इल्हामों द्वारा बड़े विस्तार से सूचनाएँ दी हैं जिन से मालूम होता है कि अमन की हालत में हमें क़ादियान जाना होगा और ऐसा एक बार नहीं होगा दो-दो बार तीन-तीन बार चार-चार बार होगा और अन्ततः ज़माने की परिस्थितियों को ऐसे बदल देगा कि यह देश और इसके रहने वाले हमें हमेशा के लिए अपना निवासी बनाना स्वीकार करेंगे और बड़े प्रेम से हमें यहाँ आकर बसने का निमन्त्रण देंगे। इसके कुछ लक्षण मैंने अपनी सैर के दौरान देख लिए हैं वास्तव में एक अवसर पर जब हम दारुलअनवार की सैर से वापस आ रहे थे तो एक कोठी के दरवाज़े पर एक आदरणीय सिक्ख और उनकी पत्नी खड़े थे। मैंने उनको सलाम किया उन्होंने भी सलाम किया और क़रीब आ कर कहा - मैं यह निवेदन करने के लिए खड़ा हूँ अब आएँ तो वापस न जाएँ। हमें आपकी आवश्यकता है, हमेशा के लिए हमारे हो कर यहाँ रहें।

याद रखिए ये प्रेम भावनाएँ जहाँ उनके सदाचरण की गवाही देती हैं उनके मानवीय मूल की गवाही देती हैं वहाँ क़ादियान के दरवेशों के हक़ में भी एक बहुत बड़ी गवाही है कि इन लोगों ने बहुत ही सब्र के साथ यहाँ दिन गुज़ारे, बड़े प्रेम के साथ दिन गुज़ारे। बहुत उच्चतम शिष्टाचार पर स्थापित रहते हुए दिन गुज़ारे। वे लोग जो दूर थे उनको क़रीब किया और उनके दिल से सब भ्रम एवं सन्देह दूर कर दिए। शुभ कर्मों के द्वारा तथा सदाचरण के जीवन के द्वारा। तो ये दरवेश हैं जिनकी कुर्बानियों ने जिनके अच्छे आचरण ने हमारा मार्ग समतल किया है। आज भी उनको दुआ में याद रखें, वापसी पर भी उनको दुआओं में याद रखते चले जाएँ

और ख़ुदा की उस वह्यी पर पूर्ण विश्वास रखें और उस ईमान के साथ वापस लौटें कि ख़ुदा फिर भी आपको वापस लेकर आएगा। ख़ुदा करे कि मैं भी आपके साथ फिर आऊं। ख़ुदा करे कि हम बार-बार यहाँ आएँ और बार-बार जल्से का यह दृश्य विशालतम होता चला जाए तथा फैलता चला जाए, यहाँ तक कि वह जलसा जो पाकिस्तान में हमने अन्तिम जलसा देखा था अढ़ाई लाख का। ख़ुदा करे कि ऐसा दिन आए कि क़ादियान में हम दस-दस लाख और बीस-बीस लाख के जल्से मनाने लगें। अल्लाह करे कि ऐसा ही हो।

अहमदियत के जल्से कोई मेले-ठेले नहीं, अहमदियत के जल्से मानवता के जीवन के लिए एक ठोस सन्देश की वास्तविकता रखते हैं। मानवता के नव जीवन के लिए। इन्सानियत को कष्टों से बचाने के लिए क़ादियान का जलसा एक नमूना है। यहाँ सब क़ौमें सच्चे दिल के साथ प्रेम के साथ एक होती हुई दिखाई देती हैं। यहाँ अंग्रेज़ अहमदी मुसलमान हो या अमरीकन अहमदी मुसलमान हो या जर्मन अहमदी मुसलमान हो या हिन्दुस्तानी अहमदी मुसलमान हो अपने बीच से सब फ़िर्क़े मिटे हुए देखते हैं। तो यदि वास्तव में दुनिया में U.N.O. की नींव रखी जाती है तो मैं ख़ुदा की क़सम खा कर आपको कहता हूँ कि यह वह देश हैं जहाँ भविष्य में U.N.O. की नींव रखी जाएगी।

दुआओं में उन मेहरबानियों को याद रखें जिन्होंने ने सदव्यवहार किया और हिन्दुस्तान की सरकार का धन्यवाद भी आवश्यक है क्योंकि हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें यह शिक्षा दी है कि जो ख़ुदा के बन्दों का धन्यवाद नहीं करता वह ख़ुदा का भी धन्यवाद नहीं करता।

हम से इस सरकार ने बहुत सदव्यवहार किया है। पंजाब की

सरकार ने भी और हिंदुस्तान की सरकार ने भी। हम अपनी दुआओं में समस्त मानव जाति को याद रखेंगे। अपने वातावरण के ग़ैर मुस्लिमों को भी जिन्होंने बहुत उच्च स्तर का सदव्यवहार किया उनको भी याद रखेंगे। पाकिस्तान के वंचित लोगों को भी याद रखेंगे जहाँ मनुष्य की आज़ादी पर रोक लगा दी गयी है, जहाँ राजनीति ने यह साहस किया है कि धर्म के मामले में हस्तक्षेप करें। जहाँ हस्तक्षेप करना उन्हें शोभनीय नहीं था, जहाँ ख़ुदा की याद पर पहरे बिठाए गए हैं, जहाँ ख़ुदा के एकेश्वरवाद के कलिमः की अभिव्यक्ति पर पहरे बिठा दिए गए हैं। हम उन ज़ालिमों के लिए भी दुआ करेंगे कि वास्तव में वे हमारे भाई हैं। अल्लाह तआला उनके हाथ ज़ुल्म से रोक दे। अन्त में मैं आपको असीरान-ए-राह-ए-मौला (ख़ुदा के मार्ग में क़ैद लोगों) के लिए भी दुआ की तहरीक करता हूँ, बहुत लम्बे कष्ट उठा रहे हैं, उनका कोई अपराध नहीं सिवाए इसके कि उन्होंने यह ऐलान किया अश्हदो अन्लाइलाहा इल्लल्लाह-व-अश्हदो अन्ना मुहम्मद रसूलुल्लाह – कि अल्लाह एक है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके रसूल हैं। इस अपराध में सैकड़ों, हज़ारों हैं जिन्होंने जेल में कष्टों को सहन किया तथा निर्दोष ऐसे भी हैं जिनको फांसी के तख़्ते पर लटका देने का फैसला किया गया। ख़ुदा की तक़्दीर ने अत्याचारियों के हाथ से वह रस्सी खींच ली परन्तु अभी वे जेलों के कष्टों में जीवन गुज़ार रहे हैं। उनको भी विशेष तौर पर अपनी दुआओं में याद रखें। ख़ुदा दोनों देशों में विशेष तौर पर ऐसे इन्क़िलाब लाए कि इन्सानियत, इन्सान के अत्याचारों से हमेशा के लिए आज़ाद हो जाए। आइए अब हम दुआ में शामिल हो जाएँ।

अच्छा अब मैं इजाज़त चाहता हूँ "मुबारक सौ मुबारक" अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सम्बोधित करके यह

कहना बताता है कि ऐसे दिन आने वाले हैं जब जमाअत अहमदिया के सब चाहने वाले एक दूसरे को इन शब्दों में मुबारकबाद देंगे –

"मुबारक सौ मुबारक"

ख़ुदा ने हमें यह सौभाग्य प्रदान किया है कि जमाअत के सौ वर्ष की तारीख़ पूरी होने पर हम ने एक-दूसरे को इन्हीं मुबारक शब्दों में "मुबारक सौ मुबारक" कहा। आज इस जलसा सालाना की भी सौ वर्षीय तारीख़ पूरी हो रही है आज मैं इन्हीं शब्दों में आप सब से निवेदन करता हूँ कि "मुबारक सौ मुबारक" हम फिर मिलेंगे अगर ख़ुदा लाया। अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह

(अख़बार बद्र 10 मार्च 1992 ई० पृष्ठ 2 से 15)